समर्पण

किस किस को भूलूं,

किस किस को याद करुँ।

इस उहा पोह में,

व्यर्थ समय क्यों बर्बाद करु।।

मेरी यह रचनायें समर्पण है उन व्यथित हृदयों को जो अपनी पीड़ा को स्वर नहीं दे पाते। घुट घुट कर मरते है, पर अपनी भावनाओं को मुखरित नहीं कर पाते है।

‘नवल’

अभ्युदय 20 मार्च 1935
अवसान प्रतीक्षारत्

आभार

मैं उन सभी व्यक्त्यिों का आभारी हूँ जिन्होने मेरी व्यथा को मूर्तरूप देने का अथक प्रयास किया। मैं अपने मित्रों सर्वश्री आर.पी. भटनागर तथा राजेश श्रीवास्तव का विशेष रूप से आभारी हूँ। जिनके सतत अत्साह वर्धन से मैं इस मुकाम पर आ सका।

मैं अपने परिवार को सदस्यों अनुज वधु श्रीमती लता कुमार जो स्वयं लेखिका है, पौत्र वधु श्रमती वैशली चौरसिया जिसका साहित्य सें कोई नाता नही है। फिर भी वह मेरी रचनाओं को चाव से पढ़ती तथा कहती बाबा जी आपने बहुत अच्छा लिखा है तथा पौत्र चि. अंकित प्रसाद जिसके विशिष्ट सहयोग से इस पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हो सका, उनका भी आभारी हूँ।

नवल किशोर
फ्लैट नं. 303,
जी. सी. लाभ काम्पलेक्स
गीतापल्ली, आलमबाग,
लखनऊ
मो. : 9453016809
9369932618

लेखक परिचय

नाम	:	नवल किशोर चौरसिया
साहित्यिक नाम	:	'नवल'
पिता	:	स्मृतिशेष श्री ईश्वर दीन
माता	:	स्मृतिशेष श्रीमती विद्यावती
जन्म	:	20/03/1935, ग्राम–इस्माइलपुर जिला सीतापुर, (उ० प्र०)
शिक्षा	:	प्रारम्भिक शिक्षा–आर. एम. पी. इण्टर कालेज, गोरखपुर, आर.आर.डी. इण्टर कालेज, सीतापुर स्नातक – लखनऊ विश्व विद्यालय

साहित्यिक गतिविधियाँ

स्वतंत्र लेखन, कहानियाँ व कविता में रुचि। प्रथम लेख 1990 में स्वतंत्र भारत समाचार पत्र में प्रकाशित भारतीय स्टेट बैंक, केन्द्रीय कार्यालय की मैगजीन 'कुलोग' तथा आंचलिक कार्यालय की मैगजीन 'हमदोस्त' में लेख प्रकाशित हुए। जून 1990 से जून 1993 तक स्वतंत्र भारत समचार पत्र में लेखों का नियमित प्रकाशन।

'छत' शीर्षक से एक लघु कथा प्रसिद्ध अदाकारा श्रीमती हेमामालिनी द्वारा सम्पादित पत्रिका 'मेरी सहेली' के मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित।

भाग - 1

स्नेहाजलि

अभ्युदय 23/04/1960
अवसान 14/01/2018

तुम ब्रह्मलीन हो गये।
हम सब जल बिन मीन हो गये।।

पिता

अभ्युदय
अवसान

काल के क्रूर हाथों द्वारा छला गया।
बुढ़ापे का सहारा चला गया।।

माता

अभ्युदय
अवसान

सबका दुलारा चला गया।
आँखों का तारा चला गया।।

छोटे भ्राता

अभ्युदय
अवसान

सरे बाज़ार लुट गया।
दाहिना बाजू टूट गया।।

पत्नी

अभ्युदय
अवसान

ता उम्र साथ निभाने के दावे हवा हुए।
मझधार छोड़ हमको तुम दफा हुए।।

पुत्र

अभ्युदय
अवसान

वक्त की मार से बच न पाया।
उठ गया सर से पिता का साया।।

अनुज पुत्र

अभ्युदय
अवसान

पाती न संदेश।
बड़े पापा गये कौन से देश।।
अक्सर तुम्हारी याद आती है।
हम सबको बहुत रुलाती है।।

प्राण पखेरु

नब्ज थमी धड़कन रुकी।
नयन मुंद गये।।
सबके देखते प्राण पखेरु।
न जाने किधर गये।।
हक्के-बक्के परिजन चित्कार उठे।
काल के क्रूर हाथों वह लुट गये।।
खेल तो खत्म हो गया।
मूक दर्शक रह गये।।
होता ये चला आया है।
होता ही रहेगा।।
बिछड़ों की याद में।
इन्सान रोता ही रहेगा।।

मुंदी आँखे

तुम्हारी आँखे क्या मुंदी।
हाहाकार मच गया।।
प्रकाश पुंज विलुप्त हुआ।
अंधकार घिर गया।।
हम सभी से तुमने।
पल में नाता तोड़ लिया।।
अब बन्धु बन्धुओं को।
मझधार बिलखता छोड़ दिया।।

जीवन बगिया

जीवन बगिया अब।
कभी न महकेगी।।
अब न कलरव होगा।
न बुलबुल चहकेगी।।
जख्म जो तुमने दिए।
अब कभी भरेंगे नहीं।।
खुशियों के पुष्प अब।
कभी खिलेंगे नही।।
तुम्हे देख पाने को आँखे।
जीवन भर तरसेगी।।
पर तुम्हारी यादें।
ता उम्र महकेगी।।

अलविदा

तुम तो चले गये।
हमें बिलखता छोड़ गये।।
बुढ़ापे का सहारा ये।
झुकी कमर तोड़ गये।।
शिकायत करें किस से हम।
वख्त के हाथों छले गये।।
याद तुम्हारी आई आती रहेगी।
ता उम्र हमें यूँ ही रुलाती रहेगी।।

जख्म

जख्म कुदरत ने हमें जो दिए।
वह भरने वाले नहीं।।
नयनों से उमड़ते यह आँसू।
कभी थमने वाले नहीं।।
लाख जतन कर ले जमाना।
इस सदमें से हम उबरने वाले नहीं।।

पंचतत्व में विलीन हो गये

तुम पंचतत्व में विलीन हो गये।
हम जल बिन मीन हो गये।।
अचानक ये क्या से क्या हो गया।
सुगम जीवन पथ कंटकाकीर्णा हो गया।।
अब पलाश फूलेगा न गुलाब महकेगा।
रुप रसपान कर न भौंरा बहकेगा।।
उजड़े गुलशन मंद ब्यार न डोलेगी।
चातक टेरेगा, न कोयल बोलेगी।।
तीज त्योहार, न उत्सव मनायेंगे अब हम कभी।
ता उम्र अविरल अश्रुधारा बहायेंगे हम सभी।।

झरना

पीर ने नीर का।
झरना बहाया।।
आज अपना कोई।
बहुत याद आया।।
अब हम मिल।
न पायेंगे कभी।।
गीत अनुराग के।
ओठों पर न आयेंगे कभी।।
ये झरने तो बहते रहेगें सदा।
गुलाब यादों के महकते रहेंगे सदा।।

याद आती है

जब याद तुम्हारी आती है।
नयन नीर उर पीर भर जाती है।।
चाहता तो यही हूँ।
हसूं, खेलू, मुस्कराऊ।।
पर बिछुड़ों की यादे।
कैसे मिटाऊ।।
यादें उनकी चैन से।
हमें सोने नहीं देती।।
और कुछ मजबूरिया।
जी भर हमें रोने नहीं देती।।
आंसू बहाने से।
टीस कुछ कम हो जाती है।।
जब याद तुम्हारी आती है।
नयन नीर उर पीर भर जाती है।।

चाह

अब जीने की चाह नही।
मन मार के जिंदा रहना है।।
जीवन पथ पर जीवन साथी।
अब चलना नही घिसटना है।।

कैसे भुलायें

हम तुम्हे कैसे भुलाये,
गम की आंधियों में।
यादों के दीप,
कैसे बुझायें।
प्रातः की स्वर्णिम रश्मियां,
जब धरा पर मुस्कुराती।
चिड़िया समदेत स्वर से,
स्वागत गान गाती।
मादक मलय छू लतिकायें,
झूम झूम कर गाती।
तब तुम्हारी याद आती,
नयन नीर उर पीर भर जाती।
यह टीसें कैसे दबाये,
हम तुम्हे कैसे भुलायें।
पाती न संदेश,
गये जाने तुम कौन से देश।
हम तुम्हे वापस कैसे बुलायें,
हम तुम्हे कैसे भुलायें।
खोया जो पाना नही है,
गया वख्त लौटकर आना नहीं है।
अपने मन को पर हम कैसे समझाये,
हम तुम्हे कैसे भुलायें।

नायाब तोहफा

किसमत ने अपना
तोहफा लौटा लिया।
हम चिखते-चिल्लाते रहे,
अकस्मात यह क्या हुआ?
अपने आंसू पीन को,
मजबूर है हम।
तुमसे मिलना अब ना मुमकिन
न जाने कितनी दूर है हम।
कहने को हम जी रहे है,
पर बेनूर है जिन्दगी।
बेबस मौत की कैद
में है जिन्दगी।

यादें

तुम तो चले गये,
यादें तुम्हारी रह गई।
कहने को फकत,
बातें तुम्हारी रह गई।
वख्त की आंधियां
कुछ यूं चली।
पके फल रह गये,
चली गई अधखिली कली।

राख में मिलना पड़ा

आंधिया न तेज हवायें।
चिराग फिर भी गुल हो गय।।
गरम नस्तर सा कुछ।
जिगर के पार हो गया।।
अश्को के समन्दर ने।
सभी को हिला दिया।।
न चाहने वालो को।
भी बरबस रुला दिया।।
कुदरत से हाय ये।
कैसा अन्याय हो गया।।
बूढ़ा बाप बैठा रहा।
जिगर का टुकड़ा राख हो गया।।
समय के कुठाराघात।
सम्मुख सर झुकाना पड़ा।।
भरी आंखो, कापते हाथों हमें।
अपनों को राख में मिलाना पड़ा।।

जिये हम किसके सहारे

जिये हाय हम किसके सहारे।
असमय लुट गये चांद-तारे हमारे।।
वख़्त के मारे।
हम सब बेचारे।।
कई बार ऐसे मौके भी आये।
गिरे संभले और मुस्कराये।।
कई बार लोगो ने हमको उठाया।
गले लगाया रास्ता सुझाया।।
जिंदगी मे हमने कई दांव खेले।
कुछ हाथ आया बहुत फिसले।।
आंधियों में हमने दीप जलाये।
भटको को रास्ते पे लाये।।
सब कुछ भूल गये अब।
हम दर्द के मारे।।
जिये हाय हम अब।
किसके सहारे।।
खता क्या हमसे हुई।
इतनी क्रूर जो सज़ा मिली।।
जगह पर हमारी।
बच्चो को सज़ा मिली।।
हम जिंदगी की जंग हारे।
जिये हाय हम अब किसके सहारे।।

अभिशप्त जीवन

बड़ा अभिशप्त है,
जीवन हमारा।
सरे बाजार लट
गया कंचन सारा।
बांगवा ने था चमन को
जतन से सम्भाला।
पल्लवित हो पौधे फले फूलें
इसके लिए क्या क्यो था न कर डाला।
बांगवा बहुत इतरा रहा था
विधाता मंद मंद मुस्कुरा रहा था।
सुनामी से उसने बाग उजारा
देखता रह गया माली बेचारा।
परिन्दों ने जतन से पेड़ो पर
थे घोंसले बनाये।
बड़े अरमान से
थे उनको सजाये।
अंधड़ आया गिर
गया पेड़ बेचारा।
पक्षी हो गये
सब बेसहारा।
नदी किनारे थे मंदिर बनाये
बाढ़ ने वो सब ढहाये।
नयनों से बह रही अश्रुधारा
यूँ ही कटेगा जीवन सारा।
बड़ा अभिशप्त है
जीवन हमारा।
बड़ा अभिशप्त है
जीवन हमारा।

त्योहार

बुझे दिल से हम कही,
कैसे त्योहार मनायें।
रो रहे मन से हम,
कैसे मल्हार गाये।
विधाता ने यह कैसे रंग दिखये,
अपने जाये हमने पंचतत्व में मिलाये।
जाने वालों को हम भला न पायेगें,
अब ता उम्र न कोई त्योहार मनायेंगे।

अभिलाषा

अभिलाषा थी जिनको।
कंधो पर जाने की।।
असमय हमें ही उनको।
उढ़ना पड़ा।।
बलैय्या ले ले कर जिनकी।
हम थकते न दे कभी।।
हस्ती उनकी विवश हो।
हमें ही मिटाना पड़ा।।
सोंचा भी न था।
कि ऐसे भी दिन आयेंगे।।
तकदीर के हांथो।
हम लाचार लूटे जायेगे।।
यह आंसू यूं ही बहते रहेंगे।
यादों के गुलाब महकते रहेंगे।।

होता ही रहेगा

मौत की गोदी में।
जिन्दगी फल फूल रही है।।
न जाने दुनिया क्यों।
यह सब भूल रही है।।
दुलराते दुलराते एक दिन।
सदा के लिए सुला देगी।।
बन्धु बान्धवो को।
एक क्षण में रुला देगी।।
एक हादसा समझ।
दुनिया इसको भुला देगी।।
यह तमाशा होता आया है।
और होता ही रहेगा।।
इंसान यूँ ही।
जीता और मरता रहेगा।।
वेटिंग लिस्ट में।
हम सबका नाम है।।
कन्फर्म करना।
कुदरत का काम है।।
टिकट जिस घड़ी कन्फर्म हो जायेग।
उस दिन नामों निशां हमारा मिट जायेगा।।

फायदा क्या है?

अविरल आंसू बहाने से।
फायदा क्या है?
दीदे अपने गवांने।
से फायदा क्या है?
जाने वाले को लौटकर आना नहीं।
गमजदा जिंदगी जीने से फायदा क्या है?
आओ हसें, खेलें और मुस्कुरायें।
अवसाद को दूर भगये।।

खुल कर जियो

जबतक जिंदगी है।
खुलकर जियों।।
खून के आंसू।
अब और मत पियो।।
अजड़ा चमन फिर।
हरा-भरा बनाना है।।
सारे जहाँ को हमें।
रास्ता दिखाना है।।

कुदरत की मार

कुदरत की मार से।
उबरना होगा।।
सुनामी सदमें से।
हमें उबरना होगा।।
एक पेड़ गिर जाने से।
चमन नहीं उजड़ा करते।।
धैर्यवान संकट में।
भी गिरते और सम्भलते रहते।।
हम सब को भी अब।
दिल पे पत्थर रखना होगा।।
कुदरत की विषम मार से।
सबको उबरना होगा।।
होनी होकर रहती ही है।
हम सबको सम्भलना होगा।।
जिंदगी अपनी तबाह करने।
से भी कुछ होने वाला नहीं।।
गया है जो अब।
लौटकर आने वाला नहीं।।
बुझते चरागों को।
अब हमको जलाना होगा।।
नये सिरे से हमको।
अब जीवन बिताना होगा।।

अनमोल जीवन

बहुत रो लिए अब,
न कभी रोयेगें हम।
अनमोल जीवन यूँ,
न खोयेंगे हम।
रोना बिलखना छोड़,
नया कुछ करना होगा।
नई इबारत लिखनी होगी,
नया फसाना कहना होगा।
आते हैं हम यहाँ,
जाने के लिए।
छोड़ जाते है अपनों,
को आंसू बहाने के लिये।
जीवन धारा अविरल बहती,
धरा के संग बहना होगा।
दर्द विधता ने जो हमको दिया,
साथ उसको दुनिया में रहना होगा।
क्या करें खुदाई के मारे है,
पर जंग जिंदगी नहीं हारे है।
नयन नीर उर पीर रहेगी सदा,
जीवन सरिता यूं ही बहेगी सदा।

नायाब सितारा

वह एक नायाब सितारा था
हर दिल अजीज़ सबसे निराला था
हम सबके आँखों का तारा था
हमारे बुढ़ापे का सहारा था
वह डूब गया तो डूब गया
कुनबा गम में डूब गया तो डूब गया
हमारे रंजो गम का ठिकाना नही
उसको लौट कर अब आना नहीं
माना कि अब उसको नहीं पाना है
ता उम्र हामको तो आंसू बहाना है

पुर्नजन्म

मान्यता है कि ब्रह्मलीन किसी
न किसी में धरा पर पुनः अवतरित होते है। इसी को
ध्यान में रखते हुए मैंने लिखा है कि:-

फूल बन तुम किसी
चमन में खिल गये होगे।
ममत्व भरे आंचल की
छांव में पल रहे होगे।
सुरभित रहे सदा
उपवन वह प्यारा।
पोषित हो रहा
जहाँ रौशन तुम्हारा।

भाग - 2

स्मृतांजलि

अभ्युदय 20 मार्च 1935
अवसान प्रतीक्षारत्

ओ मानस के राज हंस
सोचा न था तुम फुर्र हो जाओगे
थपेड़ो से लड़ने को
हमें अकेला छोड़ जाओगे।
अब जीने की चाह नही,
जीवन में उत्साह नहीं।

नवल चौरसिया

हरि इच्छा

28 जनवरी 2022, शुक्रवार का दिन मेरे लिए जीवन पर्यन्त अविस्मणिय मनहूस दिन रहेगा। इस दिन मेरी प्रिय जीवन संगिनी लम्बी एवं कष्टप्रद व्याधि के चलते मुझे व समस्त परिवार को रोता बिलखता छोड़कर शून्य में विलीन हो गई।

नयन मुंदे, नब्ज रुकी, सांसे थम गई,
हाहाकार मच गया।
जाल लिए रहे हम खड़े,
पंछी उड़ गया।

हमारा पणिग्रहण संस्कार जून 1955 में हुआ था। तब से लेकर जून 2020 तक हमलोगो ने कामोवेश आराम तलब जिंदगी व्यतीत की। कन्याकुमारी से लेकर अण्डमान नीकोबार तक भ्रमण किया। कन्याकुमारी तो हम लोग अपने दोनो लाडलो के साथ गये थे। अण्डमान निकोबार में हमलोग स्नेक आईलैण्ड के सामने बने भव्य होटल में ठहरे। हमलोगो ने वह लॉज भी देखा जहाँ भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी कुछ दिन ठहरी थी। आज भी अण्डमान में ऐसे आदिवासी पाये जाते हैं जिनका आधुनिक्ता से कोई मतलब नहीं है।

हमलोग एक बार शिमला भी गये। वापसी में कुछ दिनों के लिए दिल्ली ठहरे। एक दिन घूमते समय मेरे छोटे सुपुत्र की नाक से ब्लीडिंग होने लगी। मेरे तो हाथ–पांव फूल गये। परन्तु स्थानीय लोगों तथा राहगीरो ने बहुत मदद की। एक दकानदार ने मुझसे पूछा कि कहीं आप शिमला से तो नहीं आ रहे हैं। तब उसने कहा कि फिर चिन्ता की कोई बात नहीं है। पहाड़ से मैदानी इलाके में आने पर यदा–कदा कुछ ऐसा हो जाता है। परन्तु न जाने क्यों मुझे उसी दिन से पहाड़ी स्थानो से अरुचि हो गई। दोबारा किसी भी पहाड़ी स्थान पर जाने की हिम्मत मैं नहीं जुटा सक।

जून 2020 में मेरी पत्नी अकस्मात ही गंभीर रुप से अस्वस्थ हो गई उनको अस्पताल ले जाना पड़ा। कुछ दिनों पश्चात वह स्वास्थ लाभ कर वापस आ गई। देखने में तो वह स्वस्थ नजर आती थी परन्तु वास्तव में वह पूर्णरुपेण स्वस्थ नहीं थी। कुछ ऐसा था जो वह व्यक्त नहीं कर पा रही थी और डॉक्टरों की पकड़ में भी वह नहीं आ रहा था। वह दिन ब दिन कमजोर होती जा रही थी। उनका ठीक प्रकार से चलना फिरना भी दश्वार हो रहा था।

यह मात्र संयोग ही है कि जून 2021 में वह एकाएक फिर गम्भीर रुप से अस्वस्थ हो गई उनको पुनः अस्पताल ले जाया गया। 10–15 दिन बाद वह स्वास्थ लाभ कर वापस आ गई। कुछ दिनों तक तो सब कुछ सामान्य रहा फिर अचानक उनकी तबियत खराब रहने लगी और इस बार जो उन्होने खाट पकड़ी तो फिर अंतिम सांस तक उससे चिपटी ही रही।

पत्नी के निरन्तर गिरते हुए स्वास्थ तक असमान्य परिस्थितियों के चलते छोटी बहु ने खाना बनाने के लिए एक सेविका रख ली। वैसी परोपकारी महिला मैने आज तक नही देखी। वह सबको 'राधे–राधे' कह कर सम्बोधित करती। इस कारण हमलोगो ने उसका नाम ही राधे–राधे रख लिया। आते ही एक बार वह सारे परिवार पर छा गई। मुझे पिता जी व पत्नी को माता जी कह कर पुकारने लगी। सेवा भाव तो उसमें कूट–कूट कर भरा था। आते ही उसने मेरी रुग्ण पत्नी की सारी जिम्मेदारी अपने उपर ले ली। कहने को तो वह खाना बनाने के लिए रक्खी गई थी

परन्तु वह अधिकांश समय अपनी मुहबोली माता जी के पास गुजारती। उनको नहलाती, धुलाती, उनकी गन्दगी साफ करती, कपड़े बदलती तथा कपड़े धोती, उनका श्रृंगार करती तथा यदा–कदा रामायण पढ़ कर सुनाती। उसने इतने मनोयोग से उनकी सेवा की जो सगी बेटी क्या करती। उसका कहना था कि मानव सेवा से बढ़कर और कोई धर्म नही है। इसी भावना से प्रेरित तथा ईश्वरीय प्रेरणा के वशीभूत होकर वह यह सब कर रही है। उसके आने पर पत्नी को एक प्रकार से नवजीवन मिल गया। मैं तो समझता हूँ कि यह मेरी सहचरी के किसी पूर्वजन्म में किये गये सुकर्म का फल था जो उनको निःस्वार्थ सेवा करने वाली ऐसी महिला मिली।

इस सब के बावजूद पत्नी का स्वास्थ बद से बद्तर होता गया। उनका दायां अंग लकवा ग्रस्त हो गया। उठना बैठना बोलना भी मुश्किल हो गया। किसी को पहचानने की शक्ति भी चली गई। वह अधखुली आँखो से शून्य में निहारा करती। यह कहावत् कि मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों–ज्यो दवा की उनपर सटीक बैठती है।

ऐसे गाढ़े समय में शायद उस देवी स्वरुप महिला 'राधे–राधे' का मनोबल भी टूट गया। वह मुझसे कहने लगी कि पिता जी इनका गोदान करा दीजिये न जाने इनके प्राण अटके हुए हैं। उसने जो भी कहा, जैसा भी कहा हमलोगों ने वैसा ही किया। परन्तु होनी को कौन टाल सकता है।

दिनांक 28/01/2022 को प्रातः ब्रह्म मूहूर्त में उन्होने कब अन्तिम सांस ली हमलोगो को पता ही नही चला। उसी दिन दोपहर बाद अन्तिम संस्कार भी कर दिया गया।

अब जब मैं उनके जीवन काल के विगत 3–4 वर्षो पर विहंगम दृष्टि डालता हूँ तो मुझे उनकी असाध्य बीमारी की जड़ कुछ कुछ समझ आ रही है। उनके शरीर का क्षरण तो उसी दिन से शुरु हो गया था। जिस दिन हमारे ज्येष्ठ पुत्र का आकस्मिक निधन हुआ था। सन् 2018, 14 जनवरी मकर संक्रान्ति के दिन प्रातः काल हमारे ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मलीन हुए। इस दारुण दुःख में क्रूर काल ने एक कील और ठोंक दी। 22 अप्रैल 2018 को ही मेरे अनुज के ज्येष्ठ पुत्र का देहावसान हो गया। वह सोया तो सोया ही रह गया। 4 महीने के अन्तराल में दो जवान–जवान बेटों की अकाल मृत्यु ने हमलोगो को बिलकुल ही तोड़ दिया। मेरी पत्नी कुछ ज्यादा ही शोक संतप्त हो गयी। वह एकदम शांत एवं एकाकी हो गई। बहुओं की सूनी मांग व उदास चेहरे देख कर वह जिस प्रकार उच्छवास लेती व डबडबाई आँखे पोछती वह उनकी मर्मान्तक पीढ़ा का द्योतक है। इसी आन्तरिक पीढ़ा ही मेरी पत्नी की मृत्यु का एकमात्र कारण बनी।

मेरी पत्नी बहुत ही सुघड़, शान्त स्वभाव तथा आडम्बर विहीन साधारण महिला थी। वह विशुद्ध शाकाहारी होने के बावजूद हमलोगो के लिए नानवेज बनाने में बिलकुल भी परहेज नहीं करती थी। ममत्व बिलकुल कूट–कूट कर भरा था। हमलोगो में दूसरे लोगो के बच्चों को भी पाला है। एक परिवार का तो कहना है कि यदि आपलोग न होते तो जिस मुकाम पर हम आज है, उस तक पहुँच ही नही पाते। हम आपके आजीवन आभारी रहेंगे। स्वर्ण आभूषणों से उनका कोई विशेष लगाव न था। अपितु उन्होने कई स्वर्ण आभूषण खोये। यह कोई अपवाद नही है। मैने भी कई अँगूठियां खोई है, एक अंगूठी तो पन्ना जड़ित थी।

ईश्वर उनकी आत्मा को शन्ति प्रदान करे।

ऊँ शान्ति – ऊँ शान्ति

नवल चौरसिया
फरवरी 2022

अंगूरी

आज से लगभग एक माह पूर्व जीवन के अन्तिम पड़ाव पर मेरी इकलौती वैधानिक जीवन संगिनी मुझे व समस्त परिवार रोता कलपता छोड़ स्वर्गस्थ हो गई। क्रूर काल के इस कठाराघात ने सब कुछ छिन्न–भिन्न कर दिया। दया, ममता, प्रेम और स्नेह की रुप पत्नी के न रहने के पश्चात मेरी दुनिया ही अंधकार मय हो गई। घर का वह कमरा क्या सारा घर ही जैसे सांय–सांय कर रहा है। कमरे के अन्दर आते ही उनकी शून्य मे निहारती अधखुली आंखे व उनकी कृष काय काया मेरे सम्मुख साकार हो उठती है। मैं भाव विछ्ल हो जाता हूँ। उनके सानिध्य में गुजारे वह स्वर्णिम पल हृदय पटल पर जीवांत हो कर मुझे विचलित कर देते है। मेरी समझ में नही आता है कि मैं करुं तो क्या करुं। मेरी जिन्दगी तिनके–तिनके बिखर गई है। संवेदन हीन क्रूर काल ने वह झन्नाटेदार तमाचा मेरे मुह पर जड़ा है कि मैं विवेक शून्य हो गया हूँ।

ऐसे गाढ़े समय पर सुरा नामक सुन्दरी ने मेरा बहुत साथ दिया। उससे मेरी लागडार तो पहले से ही थी परन्तु आजकल प्रगाढ़ता कुछ ज्यादा ही हो गई है। उसन ऐसे कुसमय में मेरा साथ जो दिया है। बिना नागा नियमित रुप से रात्रि 8 बजे के लगभग मेरे पास आ जाती है। मेरा उसका साथ लगभग 1 घंटा रहता है। फिर वह मुझे निद्रा देवी को सौंप कर किसी और का विषाद मिटाने चली जाती है।

वह इतनी सहृदय हैकि वह बिना किसी भेदभाव के सबकी सेवा बड़े मनोयोग से करती है। मेरी समझ में तो 'वसुधैव कुटुम्बकम धर्म' सही माने में वही निभाती है। उसमें एक दुर्गुण भी है वह यह कि वह क्षमाशील कतई नही है। अबतक लोग उससे इज्जत से पेश आाते है वह उनका भला ही करती है। यदि किसी ने भी जरा सी भी ज्यादती की तो वह ज्यदती करने वाले को मृत्यु द्वार तक ले जाने में तनिक सा भी नही हिचकिचायेगी।

सुरा के गुणों व अवगुणों का बखान करना न तो मेरा घ्येय है। और न ही उचित प्लेटफार्म। मेरा उद्देश्य तो केवल अपनी अव्यस्थित जिंदगी कोा दर्रे पर लाने का है। एन केन प्रकारेण शेष जीवन यापन तो करना ही है।

मैं तो केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि

अब जीने की चाह नही
फिर भी जिंदा रहना है।
जीवन पथ पर जीवन साथी
अब चलना नहीं घिसटता है।
गुजर रही जो हम पे,
बता न पायेंगे।
ताउम्र उनकी यादें,
भुला न पायेंगे।।

नवल चौरसिया

2 जून 2022 विवाह की 67वी सालगिरह पर

आज अचानक फिर ए
खुशबू फैली यादों की
याद आ गई मुझे इस दिन
1955 की मिली हुई सौगातों की
मुझे जोकर बनाया गया
घोड़े पर बैठाया गया
गाजे बाजे के साथ
आधा शहर घुमाया गया
फिर कन्या द्वार ले जाया गया
मान, मनौवल पश्चात घोड़े से उतारा गया
मंत्रोचार संग द्वाराचार हुआ
सबका स्वागत सत्कार हुआ
मुझे अन्दर ले जाया गया
मंच पर बैठाया गया
गले में जयमाल पड़ी
खिल गई मन की हर कली
वहाँ जो सौगात मिली
वह जीवन का हार बनी
सन् 55 से लेकर 2021 तक
हमलोगों की खूब छनी
कितने ही उन्मादो के क्षण आये
कितने ही उवसादो के क्षण आये
हंस हंस कर हमने सबको निपटायें
उन्मुख हँसी ओंठो पर लाये
2022 में समय ने करवट ली
भार्या ने चारपाई पकड़ ली
बहुत इलाज करवाया
पर कुछ काम न आया

28 जनवरी को उस ने
हम सब से मुंह मोड़ लिया
हमको बिलखता छोड़
शून्य से नाता जोड़ लिया
हर्ष और विषाद जीवन
में होते हैं सबके साथ
जितनी भी जतन करो
मिलती नहीं इनसे निजात
सारस की भांति हमको
अब एकल जीवन जीना है
काल चक्र के सभी
थपेड़े मुझे अकेले सहना है
रहेंगे नही तो जायेंगे कहाँ
ढूढ़ने पर भी उनको पायेंगे कहाँ
सुधियों के बादल गहरायेंगे
हम बरबस नीर बहायेंगे

नवल चौरसिया
2 जून, 2022

2 जून 2022

आज से पहले 2 जून को
बड़ी प्रतीक्षा रहती थी
क्या-क्या होगा क्या करेंगे
लम्बी से फेहरिस्त बनती थी
और सुबह से ही
फोन आने लगते थे
हैप्पी मैरिज ऐनीवर्सरी
मेनी रिटर्नस सब कहते थे
लाजवाब पकवानों से
घर महकता था
घर का बच्चा-बच्चा
चिड़ियों सा चहकता था
शाम को महफिल जमती
केक काटा जाता था
एक दूजे को खिलाकर
सबको बांटा जाता था
गाना बजाना होता
बोतलें खुलती थी
जाम से जाम टकराते
सारी फिजा महकती थी
आज 2 जून
अपवाद लग रहा है
दिल में दर्द
आंसू बन उमड़ रहा है
पर शून्य में विलीन
वह आसपास लग रहा है

नवल चौरसिया
2 जून, 2022

पाणिग्रहण संस्कार की 67वीं सालगिरह पर

भूल न पायेंगे

श्यामा मधुरिक्त गान
जब पंचम श्वर में गाती है
अमराई से कोयल
सुर में सुर मिलाती है
टेर चातक की 'पिऊ कहाँ'
मन मुग्ध कर जाती है
बिस्तर से उठ जाते है
नींद हमारी उड़ जाती है
सुधियों को बादल
अनायास घिर आते है
चित्र तुम्हारे हृदय पट्ल
पर उभर उभर कर आतें है
मन उद्वेलित हो जाता है
नयन जल प्रपात बन जाते है
न भूले हैं न भूल
पायेंगे हम कभी
स्मृति में तुम्हारी ता उम्र
आँसू बहायेंगे हम सभी

नवल चौरसिया
2 जून, 2022

तलाश

कोई तो रहनुमा आये
मुझको राह दिखलाये
उनकी सुमधुर यादों से
हम कैसे निजात पायें
पिऊ के रुदन को
कोई रोक पाया है क्या
उफनाती नदियों के रुख
कोई रोक पाया है क्या
जीवन की त्रासदी
हमको ही झेलना है
एकाकी नीरस जीवन
मुझको ही जीना है
यह जख्म जो हमको मिला
इनकी दवा है ही नहीं
जख्म यह भर जाये
कुदरत को यह गवारा ही नहीं
इन्हीं जख्मों के साथ
जीवन मुझे ही बिताना है
अन्तिम पहर जीवन का
हसते रोते गुजारना है
यूँ ही हसते गुदगुदाते
एक दिन चला ही जाऊँगा
मगर ऐ दोस्तों
मैं याद बहुत आऊँगा–मैं याद बहुत आऊँगा।

नवल चौरसिया
2 जून, 2022

स्वर्ग-नर्क

हम निष्प्राण देह की इज्जत करते है
विधि–विधान से विदा देते हैं
कहीं मिट्टी में दबा तो
कहीं अग्नि में जला देते हैं
जाने वाले का इस
जहाँ से नाता छूट जाता है
पर परिवार वालों
का दिल टूट जाता है
जाने वाले के बारे में
वह कयास लगातें हैं
उसका जाना कुछ
स्वर्ग तो कुछ नर्क लोक बतलाते है
अरे स्वर्ग व नर्क लोक
दोनों तो यहीं जमी पर है
अज्ञान्ता के पर्दे की
कारण हम देख नहीं पाते हैं
मरने के बाद जीव
हवा में विलीन हो जाता है
हवा किधर और कहाँ जाती है
कौन देख पाता है
कौन देख पाता है।

नवल चौरसिया
27 जून, 2022

काश

काश जीते जी मैने
तुम्हारी बात मान ली होती
पीने, पत्ते न खेलने
की ठान ली होती
तुम्हारी अन्तर की
पीड़ा खत्म हो जाती
अनन्त यात्रा की राह
तुम्हारी सुगम हो जाती
पर ऐसा हो न सका
तुम निराश हो कर चली गई
मेरी ख़ुशियां मेरी दुनियां
तो उजड़ ही गई
अब अगर मैं यह
बुराईयां छोड़ भी दूं
तो क्या तुम देख पाओगी
धरा पर लौट कर तो अब न आओगी
मुझे अब इन्ही के सहारे जीना है
पीता हूँ तुम्हे भुलाने के लिए
खेलता हूँ दोस्तों संग
समय बिताने के लिए
यह सिलसिला तो चलता ही रहेगा
साथ तुम्हारा अब दुबारा न मिलेगा
जब जीवन ही मिट जायेगा
यह सब स्वतः ही खत्म हो जायेगा।

नवल चौरसिया
3 जून, 2022

बहुत रोता हूँ

जिधर से भी गुजरता हुँ मै
तेरी आहत सुनाई देती है
किसी भी स्मित नजर डाँलू
तेरी सूरत दिखाई देती है
तेरी तस्वीर लगा के
सीने से सोता हुँ मैं
खुल जाती हैं आँखे
बेबश बहुत रोता हूँ मैं

कोई हमारा न हुआ

तुम्हारा यूं जाना
गवारा न हुआ
इस भरी दुनिया में
कोई हमारा न हुआ
सदाबहार पौधे
कुम्हला गये हैं
दिलफरेब नग में
हवा हो गये हैं
कोई भी इतना
सहारा न हुआ
तुम्हारा यूँ जाना
गंवारा न हुआ
इस भरी दुनिया में
कोई हमारा न हुआ।

नवल चौरसिया
25 जून, 2022

इच्छा

खाक में मिल कर भी।
हम तुम्हें भुला न पायेगें।।
सच है मर कर भी।
अब तुमसे मिल ना पायेगें।।
अब तो जीना है फक़त।
तुम्हारी यादो के सहारे।।
मिलेगी न ज़हाँ से छुटी।
बिना सासों का कज़्र उतारे।।
तुम गये क्या तुम्हारा।
नामो निशा मिट गया।।
मगर इस दिल में यादों।
का एक शहर बस गया।।
इस जहाँ में हमे भी।
रूखस्त्त होना है।।
राख बन कर ही सही।
तुम्हारे पास होना है।।

नवल चौरसिया
15,04,2022

हालात

आते ही ख्याल
आँखे छलक पलक पड़ती हैं
दिन और रात तुम्हारे
दीदार को तरसती हैं
हालत मेरी कुछ ऐसी
है तुम्हारे जाने के बाद
हो जाते है जैसी सीप
की मोती निकल जाने के बाद

क्या मै जानता नहीं

जिक्र तुम्हारा छिड़ते ही नैन
जल प्रलाप बन जाते हैं
सिर छुन छुन कर हम
निरर्थक नीर बहाते है
अब मिलना है नामुमकिन
पर मन है कि मानता नहीं
घुट घुट कर जीना खूंन के आंसू पीकर
कितरत है अब क्या मैं जानता नहीं

पैगाम

हंसते चलो मुस्कुराते चलो
गुजरा जमाना भुलाते चलो
जिंदगी न मिलेगी दुबारा
सबको गले से लगाते चलो
नफरत कि दीवार ढ़हाते चलो
नई राहें बनाते चलो
भाई चारे का पैगाम
जंहा को सुनाते चलो

उपकार

जाते जाते उपकार कर गये
बहुत सारे उपहार दे गये
नयन नीर उर चीर सो पीर
जीना मेरा दुश्वार कर गये

चीर :– द्रौपदी के चीर की भांति
अनवरत बढ़ना।

बेबस

कितने लाचार बेबस हैं।
हम बेचारे
हम समझते थे जिनको अपना
छोड़ गये हमको बेसहारे।।
जिंदगी बेंनूर हो गई
जी रहे हैं यादो के सहारे।
चाह कर भी अब मिल नहीं सकते
न होगी जहाँ से छुटी
बिना सांसो का कर्ज उतारे।।
नज़र आता नहीं कोई
इस भरी दुनिया में।
जो हमको इस
महासंकट से उबारे।।

नवल चौरसिया
18,04,2022

भुल जायें

पिया नहीं पर। नशा सा है।।
उन्होंने तो मुझको। छुआ सा है।।
सिर्फ छुआ ही नहीं। कुछ कहा भी हैं।।
मैंने साफ साफ। सुना भी हैं।।
उन्होने कहा कि। मुझको अब भुल जाओ।।
मेरी यादो में से। अनमोल मोती मत लुटाओ।।
मुझे भी बहुत। तकलीफ होती है।।
स्वर्ग मे भी। मेरी आत्मा रोती है।।
इसलिए रंजो गम। छोड़ सदा मुस्कराओ।।
यह होली का त्योहार। हंस हंस कर मनाओ।।
इस जहाँ में बिछड़े हुए। न मिले है न मिलेगे कभी।।
न जानें क्यों फिर भी। पत्थरो से गिला करते है सभी।।
थोड़ी देर के लिए ही सही। उनको भुलाना होगा।।
सदा की तरह त्योहार। मनाना ही होगा।।
इसलिए आओ हम रगं। बरसायें नाचे गायें।।
जाम से जाम टकरायें। खुब पियें और पिलायें।।

कर्ज

कर्ज दुनिया का
उतार बैठे हैं
हम तुमसे मिलने
को बैताब बैठे हैं
वेटिंग टिकट जिस दिन
कन्फर्म हो जायेगा
मिलने से तुमको मुझे
कोई न रोक पायेगा

होली

तुम बिन होली।
कैसी होली।।
न यारो का जमघट।
न होरियारो की टोली।।
तुम बिन होली।
कैसी होली।।
सुधियों के गुलाल उड़े।
जी भर आखें रोली।।
चमन उजड़ा देख।
आई न भौरों की टोली।।
चातक भूला पिउ कहाँ।
पिक बैनी न बोली।।
तुम बिन होली।
कैसी होली।।

हम तुम्हें कैसे भुलायें

हम तुम्हें कैसे भुलायें
हम तुम्हें कैसे भुलायें
प्रातः की स्वरिमि रश्यिा
अब धरा को गुदगुदायें
मगन मस्त भौरें
कलीयों को बहकायें
मादक मन्द .....
लतीकाओं को सहलायें
मधुरीक्त गान कोयल
पंचम स्वर से गायें
और पक्षी तरुवरो पर
कलरव मचायें
जब तुम्हारी याद आये
हम तुम्हें कैसे भुलायें
रात है की काटे नहीं कटती
हर रात करवते बदलती बोलती
हम तुम्हारी यादों के
दीप जला मन बहलायें
हम तुम्हें कैसे भुलायें
हम तुम्हें कैसे भुलायें

नवल चौरसिया
07,06,2022

काल चक्र

तुम क्या गये अभीं
रोई आसंमा रोया
मेरा क्या है
मैने तो सब कुछ खोया
जब जीवन में तुम आये
कैशो मे कलिमा थी
और स्निगध चेहरे पर
ललिमा ही ललिमा थी
तुम्हारे संग गुजारे
पुरे ....
जाने के बाद तुम्हारे
हम हो गये बेहाल
जीवन ..... तो
प्रकृति कि सतत प्रकिया है
अंत तक साथ
.... को कौन जिया है
पर अंतिम पड़ाव पर
बिछड़ा ....
....
....
यह होता चला आया है
होता हि रहेगा
काल चक्र में मानव
पिसता आया है पिसता ही रहेगा।

नवल चौरसिया
07,06,2022

लेखा जोखा

तीन पहर तो बीत गये
बस एक पहर ही बाकी
जीवन हाथों से फिसला गया
अब खाली मुठी बाकी है
सब कुछ पाया जीवन में
फिर भी इच्हायें बाकी है
पवन का एक झोका
सब कुछ उड़ा ले जायेगा
शरीर खाक में मिल जायेगा
चौथे पहर का लेखा
जोखा क्या कोई लिख पायेगा

नवल चौरसिया
07,06,2022

कुछ भाता नहीं हैं

कभी सोचा भी न था
कि ऐसा भी दिन आयेगा
मेरा कावंरा सरे राह
युं लुट जायेगा
तुम क्या गये
जिदंगी गमगीन हो गयी
हर ख़ुशी जिदंगी कि
जाने कहाँ विलीन हो गयी
अब जिदंगी में मुझे
तस्कीन मिलने वालो
हृदय पटल से तुम्हारी
तस्वीर मिटने वाली नहीं
तुम्हारी यादों के साये
फन फैलाये मेरे
इर्द-गिर्द डेरा डाले हैं
शिकवा करु तो किससे
ये विषधर मैंने ही पाले है
दुनिया मुझे समझती है
ऊंच नीच बतलाती है
पर मेरी समझ
कुछ आता नहीं है
तुम्हारी यादों के सिवा
मुझे कुछ भाता नही है।

नवल चौरसिया
11/06/2022

उस पार

फिसलती आ रही है
जिंदगी आहिस्ता आहिस्ता
हम उस पार जा
रहे है आहिस्ता आहिस्ता
क्षितिज के पार क्या है
किसी ने आज तक जाना नहीं
उस पार की गतिविधियां बताये
ऐसा कोई सयाना नहीं
स्वर्ग लोक, नर्क लोक
हमने ही बनाए हैं
अरे नादानों यह तो
धरा पर ही छाये हैं।

नवल चौरसिया

भुला पाये

काश हम तुम्हें भुला पाते
अरमानो को अपने सुला पाते
उमड़ घुमड़ कर घन न पाते
ऊल जलूल ख्यालात न आते
भुक लगती न प्यास लगती
जिंदगी बड़ी उदास लगती है
भुलना होता तो कब का भुल गये होते
वह तो अब भी आस पास लगती है
क्या करे हम कहा जायें
अपने मन को कैसे समझायें
युं घुर घुर कर जीने से
तो बेहतर है कि मर जायें।

ओ मानस के राज हंस
हमें छोड़ तुम चले गये।
हमारे दिल से पर
तुम्हारी यादों के साये न गये।
किये गये वायदे
दिये गये वचन
हम दोनों से ही
निभाये न गये।

भाग - ३

रंगा-रंग

कवितायें
एंव
लेख

कबुतर उड़ाने की अदा क्या आ गई।
अदना कली अनार की सारे जहाँ पे छा गई।।

हार ही जीत है

रो रहा क्यों हार पर।
यह हार ही तो जीत है।।
राह के साथी बने वे।
प्यार का दीपक जलाया।।
मुड़ गये कुछ दुर चल कर।
साथ उनको चल न पाया।।
यह जगत की रीति पगले।
वेदना ही गीत है।।
रो रहा क्यों हार पर।
यह हार ही तो जीत है।।

अपनो को जग कोई खोता है
उपर से हम पर अंदर मन रोता है
सोचा भी न था कि।
तुम बिन जीना पड़ेगा।।
नयन नीर उर पीर।
और हंसना पड़ेगा।।
मेरे उर में जो ये छाले है।
ए जख्म हमने ही पाले है।।
दोष जमाने को दे क्यों हम।
जब हमारे ही दिल काले है।।

नवल चौरसिया
11/06/2022

कोई नहीं

दर्द जो हमको मिला
उसकी दवा कोई नहीं
कहने को सब हैं
पर अपना सगा कोई नहीं
बेरुखी देख कुदरत की
रात शबनम रोई नहीं
कोई कब साथ छोड़ देगा
कब कोई आंखे मूंद लेगा
हम कह सकते नहीं
रोने के सिवा अब बचा क्या है
जिंदगी जीने का अब मज़ा क्या है
आने वाले पल से अन्जान है हम
न जाने कितने दिनो के मेहमान है हम
अच्छा बुरा वक्त सद पे आता है
इसका जीवन से गहरा नाता है
वक्त के थपेड़ो से
बचे जो ऐसा कोई नहीं
दर्द जो हमको मिला
उसकी दवा कोई नहीं

अंगूरी

अंगूरी सदा बहार है
इसको सबसे प्यार है
भेद भाव यह जाने ना
खुला सबके लिए
उसका दरबार है
अंगूरी सदा बहार है
रोग दोष मिटाने वाली
चिंताये सब हर कर जाने वाली
इसने सबको गले लगाया
नहीं किसी को भी ठुकराया
.... भाव से स्वागत करती
सबकी पीड़ाये है यह हरती
इसकी माया अपरमपार हैं
अंगूरी सदा बहार है

भय

बद से बदनाम बुरा होता है
भय का नाम ही बुरा होता है
बदनाम सही बहुत काम वाली है भय
यूँ ही नहीं बहुत नाम वाली है भय
भय न होते मस्ताने न होते
भयकश न होते मस्ताने न होते
भय की माया अपरमपार
सब करते हैं इसको प्यार
भाईचारा यह बढ़ाती
सब .... हैं यह सिखाती
भेद भाव ये जाने न
राजा रंक पहचाने न
सम भाव यह दर्शाती
सबको हँस कर गले लगाती
इसकी इज्जत करोगे
जिंदगी .... देगी
बेइज्जती इसको बर्दाश्त नही
..... खेल बिगाड़ देगी

मयखाना

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई।
आपस में सब भाई भाई।।
दादाओं परदादाओं ने यह बात कही है।
कुछ हद तक तो यह सही है।।
पर असली समाजवादी मयखाना है।
यहाँ सबका आना जाना है।।

नवल चौरसिया
1/07/2016

मयखाना

खुला है मयखाना घर मिटाने को।
रंगीन इतिहास दिल लुभाने को।।
अवाम की किसे पड़ी "नवल"।
फिक्रमंद है सब कुर्सी बचाने को।।

नवल चौरसिया
1/07/2016

समाजवादी

मंदिर,मस्जिद,चर्च और गुरुद्वारे
सबके सब अलगावादी है।
भयखाना ही केवल एक
असली समाजवादी है।।

नवल चौरसिया

अक्स

भय पीकर चला था, तेरे ख़त जलाने।
भर आई आंखे लगे कदम डगमगाने।।
फितरते ईश्क को मेरा सलाम, लगा।
आंखो में तेरा अक्स झिलमिलायें।।

नवल चौरसिया

आफताब

खाली बोतलों में हम शराब ढूढ़ते रहे।
नींद आई नहीं ख्वाब ढूढ़ते रहे।।
घनी काली घटाओं में।
हम आफताब ढूढ़ते रहे।।

नवल चौरसिया

आबेहयात

शराब को खराब मत मानों
नयाब तोहफा कुदरत का जानो
जईफी इसकी जवानी है
यह कुदरत की मेहरबानी है
भाई चारा यह बड़ाती है
बुढ़ापे में एहसासे जवानी लाती है
गर जमीं पे इसका परचमलहराया न होता
जँहा सितारों से जगमगाया न होता
अबसादो को मिटाती है ये
गमज़दो को राहत दिलाती है ये
कद्रदातो को जन्नत का मज़ा देती है
बेकद्रो को दोजख की मज़ा देती है
शराब को खराब मत मानो
नायाब तोहफा कुदरत का जानो

नवल चौरसिया

कद्र

कद्र होती है यहाँ रोशनी की।
शाम ढ़ल जाने के बाद।।
हम आयेगें याद बहुत।
गुज़र जाने के बाद।।
अभी तो परवाह नहीं करते।
फिर फुल मालायें चढ़ाओगे।।
हमको ढूढ़ने से भी।
इस जहाँ में नहीं पाओगे।।
हम तो खाक में मिल जायेगें।
खूशबू फैला कर।।
तुम रोओगे बहुत हाथ।
मल-मल कर पछताकर।।
अच्छा है कि बुजुर्गो।
का सम्मान करना सीखो।।
इनकी सेवा करने से।
अपने हाथ मत खींचो।।
इनका शुभाशीश कभी।
व्यर्थ नही जायेगा।।
तुम्हारे लिए सदा।
सुख समृद्धि लायेगा।।

नवल चौरसिया

अगर तुम साथ देते

गर तुम साथ देते।
बुलंदियों पर हम होते।।
साथ तुमने निभाया नहीं।
कहा पर दिखाया नहीं।।
तुम तो चुप्पी साधे रहे।
तुम्हारा मौन हमको भाया नहीं।।
जाने क्या मजबूरियां है।
हमसे ये जो दूरियां है।।

जग से रोते हाथ चला

जग से रोते हाथ चला।
छोटे से जीवन में हाथ।।
न किया किसी का भला।
जग से रोते हाथ चला।।

यूं ही हंसते हंसाते।
एक दिन फना हो जायेगा।।
मगर दोस्तों।
मैं याद बहुत आऊँगा।।

कमाई

घर की दीवारें तोड़ दो।
हवाओं का मुह मोड़ दो।।
उपरी कमाई हराम है यारों।
अन्ना के कहने पर इसको छोड़ दो।।

सबसे न्यारे

उठती जवानी में सबसे न्यारे थे हम।
माँ–बाप की आँखों के तारे थे हम।।
हसीन अदाओं कातिल निगाहों।
अंदाज अंगड़ाईयों के प्यारे थे हम।।
और कहें क्या ''नवल'' खुद समझ लो।
बहुतों के रंगीन सपनों के सहारे थे हम।।

वय - संधि

वय संधि पर हम
हसीनाओं को जचने लगे।
उठती जवानीयों के दिलों में
बसने - लगे।।
किसी दिलरुबा से जब नैन मिले।
दिलों में हसीन ख्वाब पलनें लगे।।

सुपात्र

कमर झुकी, केशों का रंग बदला।
हम सहानुभूति के पात्र हो गये।।
मादक अदाओं, हसीन कटाक्षों।
के लिए अपात्र हो गये।।
जहाँ वालों ने हमसे मुह मोड़ा।
सरकारी अनुकंपा के सुपात्र हो गये।।

तन और मन

तन और मन में बड़ी अनबन है।
तन सुस्त कुलाचे मारता मन है।।
अशक्त तन तमाम बंदिशे।
समक्ष मन उन्मक्त गगन है।।
तन अशक्त, मन सशक्त हो रहा है।
या मेरे रहबर ये क्या हो रहा है।।
तन लकुटिया सहारे चल रहा है।
मन रंगीन अपने बुन रहा है।।

मन तन संग ढलता नहीं है।
यह हीरा पिघलता नहीं है।।
तन हवाओं में रंग बदलता है।
मन सदाबहार रहता है।।

दिल किसी का कैसे तोड़ दें।
गर्म हवाओं का रुख कैसे मोड़ दें।।
उपरी कमाई है बहुत गाढ़ी।
अन्ना के कहने पे कैसे छोड़ दें।।

सुधियों के बादल।
अनायास जब बरसेगें।।
एक बूंद स्वाती खातिर।
चातक बन तरसेंगे।।

गलत हूँ तो मुझको सज दीजिए।
प्यार क्या है मुझको बता दीजिए।।
यह शोला तो भड़कता रहेगा।
मत आंचल की अपने हवा दीजिए।।

अंगूर की बेटी

दुख्तरे अंगूर की बलिहारी
राजा–ओ–रंक है सबसे इसकी यारी
संताप हरे दुखः दर्द मिटाये
है यह सबसे न्यारी।

पीना सीख लिया

मन मार के हमने भी
जीना सीख लिया
गमें आंसुओं को अपने
भुला पीना सीख लिया
कहे किससे कि हाय
हमने तुम्हारे बगैर जीना सीख लिया

क्षणिकायें

पार्टी हारी तो क्या।
कुछ और था मकसद हमारा।।
बहुत कुछ सोंचकर हमने।
था डूबतो को उबारा।।
हसरत हैं जहाँ वालों।
दिल्ली चले कुनबा हमारा।।

बैशाखी बनना काम न आया।
खुद तो गिरे हमें भी गिराया।।
चुनाव 2014 न भूल पायेगें हम।
आवाम ने हमको धूल में मिलाया।।

रेबड़ियां बांटा, लॉलीपाप बाटें।
पब्लिक ने फिर भी लगाये चाटें।।
वजह कुछ समझ में न आई।
क्यों हमने मुँह की है खाई।।

नवल चौरसिया

माया महिमा

बहिन जी का परचम लहराया ना होता।
मरुस्थल में सैलाब आया न होता।।
कितने समीकरण बदल गये।
हम क्या थे क्या हो गये।।
बहन जी ने कहा कम किया ज्यादा।
सर्वजन हिताय और करने का है वादा।।
बदनुमा खुशनुमा हो गये।
झाड़ झखाड़ हवा हो गये।।
रंग नीला चतुर्दिक छाया है।
आसमां जमीं पे उतर आया है।।
आगत का स्वागत करते हाथी।
इनको राजनीती नहीं आती।।
भेदभाव न ये अपनाते।
सबको हैं माला पहनाते।।
बहुतेरों ने सपने दिखलाये।
बहना ने साकार बनाये।।
इन हाथों को मजबूत करो।
सब सपनों में रंग भरो।।
कुछ विघटनकारी होते है।
हर राह पे कैक्टस बोते है।।
इनके बहकावे में मत आना।
बहना का परचम लहराना।।
बहना का परचम लहराना।।

नवल चौरसिया

देहदान

देहदान है महादान।
इसमें दो राय नहीं।।
पर करना इतना आसान नहीं।
धर्म-ग्रन्थों में इसका संज्ञान नहीं।।
संस्कार आड़े आते है।
परिजन रोक लगाते है।।
देहदान करने के इच्छुक।
मन मसोस रह जाते है।।
पंडित प्रबल विरोधी है।
परशुराम से क्रोधी हैं।।
भांति-भांति बहकाते हैं।
संस्कार विरोधी बतलाते है।।
नेता देहदान नहीं करते।
लगे घुटालों में ही रहते।।
एक ने भी यदि दान किया होता।
बहुतों ने अनुसरण किया होता।।
प्रचुर प्रचार है सरल उपाय।
टी.वी. फिल्मों में बतलाता जाय।।
आओं सब मिल करें योगदान।
देहदान है महादान - देहदान है महादान।।

नवल चौरसिया

फरमाइश

एक दिन पत्नी को।
बहुत प्यार आया।।
हौले से मुस्कुरा कर।
उसने फरमाया।।
प्रिय मुझे तुम आज।
ऐसी दो लाइने सुनाओ।।
कि एक को सुनकर।
मैं खुशी से झूम जाऊं।।
और दूसरी सुन।
जलभुन कर खाक हो जाऊं।।
मैने कहा कि ऐसा है तो सुनो।
पहले हंसो फिर अपना सर धुनों।।
लाइन नं0–1''तुम मेरी जिन्दगी हो''
सुनकर पत्नी खुशी से झूम उठी
पर दूसरी सनकर क्रोध से धधक उठी
दूसरी लाइन 'लानत है ऐसी जिन्दगी पर
सुनाया मैने आपकी फरमाइश पर

जन्म जन्म का नाता

पीना चाहत को भुला देता है।
गमों से राहत दिला देता है।।
बाद पीने से राहत बहुत मिलती है।
जिंदगी बदल जाती है, उम्मीद जागती है।।
उम्र चुक गई पीने पिलाने में।
गम भुलाने मयखाने आने जाने में।।
पीने के बाद गर होश आया न होता।
बाखुदा हमने तुमको मनाया न होता।।
तौबा की थी न पियेंगे हम।
बगैर तेरे भी जी लेंगे हम।।
मगर ऐसा हो न सका।
लाख रोना चाहा मगर रो न सका।।
पीना भी दुधारा है।
न जी पाते न मर पाते है।।
जिधर देखते है उधर
तेरा ही नक्श पाते है–
पीना पिलाना सब भूल जाता है
हर जानिब तेरा पैगाम आता है
न हम भूले और न भूलेंगे कभी
तेरा मेरा जनम जनम का नाता है।

नवल चौरसिया

भूल जाना चाहते है

हम तुम्हे भूल जाना चाहते है।
हृदय पटल पर अंकित, छवि मिटाना चाहते हैं।।
पर तुम सपनों में आ जाते हो।
बुझते दिये जला जाते हो।।
शोले उमड़ पड़ते हैं।
सुधियों के अंधड़ चलते है।।
हम सो नहीं पाते।
खुल कर रो नहीं पाते।।
यह सिलसिला थमने वाला नहीं।
आँसुओं का सैलाब रुकने वाला नहीं।।
यह सब तभी रुकेगा।
जब तन मिट्टी में मिलेगा।।

वादें

वादे बहुतों ने किए
निभाया किसी ने नहीं।
आंसमा से चाँद तारे
तोड़ कर कोई लाया नहीं।।
जुगनुओं ने मगर वादे निभाये।
फलक से सितारें तोड़ लाए।।

नवल चौरसिया

फांसला

देख कर सोचा तो
फासला ही फासला पाया।
सोच कर देखा तो
तुमको अपने करीब पाया।।

अमर बेल

जीवन की जटिल समस्या
सुलझेगी अब कैसे।
सुमुखि तुम्हारी स्मृति छाई
अमर बेल हो जैसे।।

कलयुगी बयार

बह रही कलयुगी बयार देखो
कर रहे अपनों पर अत्याचार देखो
अब रिश्तों का मूल्य नही रह गया
कलयुगी आंधी में सब बह गया
वासना में डूबा इन्सान बना शैतान देखो
बह रही कलयुगी बयार देखो
बच्चे भी भूले शिष्टाचार देखो
बहू बेटियां कर रही हाहाकार देखो
बच्चियां भी अब महफूज नहीं हैं
अपने ही कर रहे इनका संहार देखो
भाई का भाई से उठ गया ऐतबार
मंजर कलयुगी बयार का यार देखो
बह रही कलयुगी बयार देखो

नवल चौरसिया

राम नाम सत्य है

राम नाम है सत्य मगर
यह कुसमय बोला जाता है।
साथ ही इसके सत्य बोलो
मुक्ति है भ्रम घोला जाता है।।
मुक्ति तो प्राण पखेरु
उड़ते ही मिल जाती है।
सत्य बोलो मुक्ति है
व्यर्थ ही दुनिया चिल्लाती है।।
अर्थी के पीछे चलने वाले ही
यह सब चिल्लाते है।
पुराना दस्तूर निभाते
अपना अवसाद मिटाते है।।
राम नाम यदि सत्य होता
धरती पर विषाद न होता।
खुशियों भरी जिंदगी होती
मानव इस प्रकार न रोता।।
है मिथ्या यह कथन
इसलिये मुर्दो को सुनाया जाता है।
केवल शव के पीछे वालों को
चीख चीख कर बताया जाता है।।

नवल चौरसिया

देवालय

कहते है यह देवालय है
नहीं होता यहाँ सबका सम्मान
नान हिन्दूज तथा शूद्र
नहीं कर यहाँ पूजा ध्यान
परिसर भीतर मन्दिर के वे जा नहीं सकते
श्रद्धा सुमन अपने देवता को चढ़ा नहीं सकते
देवालय जगमगा रहा है
धूप–अगरबत्ती का धुंआ भरा है
जय जय कारे हो रहे हैं
ढोल नगाड़े बज रहे हैं
देव दास जोर जोर से चिल्ला रहे हैं
सोते हुओं को मानो जगा रहे हैं
भक्त लाइन में खड़े है
दर्शन चढ़ावा के लिए अड़े हैं
कुछ लड़ने झगड़ने की आवाज आई
पुलिस भी तत्काल गई बुलाई
पुलिस मामला समझ मुस्कराई
सोचा अच्छा शिकार फंसा है भाई
कुछ देव दास लड़ रहे थे
माल बटवारे के लिए झगड़ रहे थे
गश्त से सुबह दरोगा था आया
मामला समझ बहुत झल्लाया
कड़क कर बोला खा रहे हो मलाई
फिर भी करते हो लड़ाई
जितना चढ़ावा आता है
सब कहां हजम हो जाता है
तुम लोग सब खाते हो
देवता के मुंह जरा सा लगाते हो
कुछ माल थाने भिजवाते हो
या अकेले अकेले उड़ाते हो
आज से बिना नागा 10 प्रतिशत् भेजना
नहीं तो पड़ेगा बहुत कुछ झेलना
पकड़ कर थाने ले जाऊंगा
ऐसी ऐसी धारायें लगाऊंगा
देवता भी छुड़ा नहीं पायेंगे
सब तुमको ही डरायेंगे
अदालत सुनायेगी कड़ी सजा
जेल में ही आ जाएगी तुम्हे मजा

नवल चौरसिया

मदिरालय

अब मयखाने की बारी आई
उसका हाल सुनो मेरे भाई
जो देखा सच–सच बतला रहा हूँ
मिला रहा हूँ न कुछ छिपा रहा हूँ
धूप अगरबत्ती यहाँ नहीं जलती
एक मादक गंध हवा में घुलती
हाल छोटा किन्तु सादा है
बैंड है न बाजा है
बेन्चों कुर्सियों पर कुछ बैठे हैं
सामने मदिरा के प्याले रखे हैं
कुछ के भरे कुछ के खाली हैं
नमकीन के साथ मय आने वाली है
कुछ पीने आ रहे हैं कुछ पीकर जा रहे हैं
झूम झूम कर कुछ गुनगुना रहे हैं
यहाँ कोई शोर शराबा नहीं
ढोल, नगाड़ा, मंजीरा नहीं
भाई यह मयखाना है
यहाँ सबका आना जाना है
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
क्या रैदास क्या हलवाई
मदिरालय में है सब एक समान
यहाँ होता है सबका सम्मान
मदिरालय बड़े कमाल के हैं
सबको एक डोर में बांधे रखते है
सब धर्म एक समान है
देखना है तो यहाँ आइये
आप आइये औरों को भी साथ लाइये
कुछ पीजिये और पिलाइये
दवा समझ दारु पियोगे
स्वस्थ और निरोग रहोगे
दारु ज्यादा पियोगे
इसके प्रकोप नहीं बचोगे।।

नवल चौरसिया

चिकित्सालय

शिक्षालय, देवालय, मदिरालय एवं चिकित्सालय
क्या आप जानतें हैं श्रीमान्?
चिकित्सालय है सबसे महान
इसकी अपनी अलग है पहचान
श्वेत वस्त्रों में यहाँ
देवगण नजर आते हैं
वयाधियां जो आपकी भगातें हैं
श्वेताम्बर देव दासियां भी नजर आती हैं
आपकी सेवा का भार ये उठातीं हैं
देवालयों में दिखती है
पत्थर की मूर्तियां
फैलाइ जाती हैं जिनके लिए
मिथ्या, भ्रान्तियां एवं किवदंतियां
बुतों के गुण गाये जाते हैं
उन्ही की आरती होती है
देव दास लकीर की फकीरी करते
उनमें मानवता नहीं होती है
आप वहां कुछ पाकर नहीं
गवां कर आते है
फिर भी वहाँ जाने की आतुरता दिखलाते है
चिकित्सालय में इन्सान रोता कलपता आता है
चंगा हो खुशी खुशी वापस घर जात है
यहाँ कोई शोर शराबा नहीं होता
ढोल, नगाड़ा, मंजीरा नहीं बजता
धूपबत्तियां, अगरबत्तियां नहीं जलाई जाती है
यह केवल बुतों, मुर्दो के सामने पाई जाती है
अंधड़ हो वर्षा घनघोर
इनपर चलता नहीं किसी का जोर
इनके द्वार खुले रहते हैं
सेवा करने में तत्पर मिलतें हैं
चिकित्सालयों की महिमा अपरम्पार है
इनको हर एक के जीवन से प्यार है
यहाँ साक्षात भगवान विचरतें हैं
सबके कष्ट निवारण करतें हैं
चिकित्सालय, मदिरालय में बड़ी समानता है
एक व्याधियां दूर भगाता है, दूसरा अवसाद मिटाता है।

नवल चौरसिया

अन्धेर नगरी चौपट राजा

अपना देश महान है
दो रंगे यहाँ की शान है
भारी रेलम–पेल है
खेलों मे भी खेल है
तीन लाये तेरह बताये
दस घर में सजाये
सब आपस में है मिले हुए
सबके चेहरे खिले हुए
कोई कुछ करता न कर सकता
बड़ों बड़ो में है इनका रिश्ता
आँखों वाले अंधे हैं, कानों वाले बहरे
देश की नैया डुबाने वालों
पर कहीं नहीं है पहरे
यह यहाँ की परिपाटी है
सांप निकल जाने पर चलती लाठी है
यह अंधेर नगरी चौपट राजा है
सफेद पोशो का बजता यहाँ बाजा है
कुण्डली मार फन काढ़ यहाँ बैठे हैं
अहा देखो कैसे ऐढ़े हैं
गर इनके पर कतरे नहीं जायेगें
देश को बेच कर यह खायेगें।

नवल चौरसिया

रसूख

जन्नत नशी ***डा0 राहत इन्दौरी*** ने लिखा है कि :-

" मेरे बेटे किसी से इश्क कर
मगर हद से गुजर जाने का नहीं"

इसी बात को मैं आगे बढ़ाता हूँ

कुछ इस तरह :-

" मेरे बेटे किसी से इश्क कर
मगर हद से गुजर जाने का नहीं"।
अगर गुजरो तो मुकर जाने का नहीं
जमाने की रुसवाई से डर जाने का नहीं।।
हर हाल में उसको घर लाना
उसी के साथ घर बसाना।
गर ऐसा न हुआ तो वह क्या करेगी
उस पे क्या गुजरेगी किससे फरियाद करेगी।।
जार - जार रोयेगी वह
बहुत बद्दुआये तुमको देगी वह।
बद्दुआओं से तुम बचोगे नहीं
कहीं के तुम रहोगे नहीं।।
तुम्हारा जीना दुश्वार हो जायेगा
तस्सवुर उसका हरदम तुम्हे सतायेगा।
इस फसाने में मेरा भी नाम आयेगा
मेरा रसूख खाक में मिल जायेगा।।

नवल चौरसिया

यू. पी. में का बा

यू0 पी0 म का बा, यू0 पी0 म का बा
यू0 पी0 में योगी बाबा का राज बा।
सर पे उनके मोदी जी का हाथ बा, चतुर्दिक विकास बा।।
सोंचा इमानदार काम असरदार बा,
गुण्डन को जेल, अच्छन की बहार बा।
लखनऊ में भूल-भूलैया, इमामबाड़ा बा
और काली जी का धाम बा।।
काशी में भोले बाबा, अयोध्या में राम बा
विन्ध्याचल में विन्ध्यवासिनी वास बा।
गोकुल में गोकुल धाम
नैमिष में तीरथकुण्ड बा।।
आगरा में आठवां अजूबा ताज बा
अमोहा में चमत्कारी मजार बा।
यू0 पी0 में बाबा योगी राज बा
सर पे उनके मोदी जी का हाथ बा।।

नवल चौरसिया

निदान

हे जगत के पालन हार।
सुन लो मेरी करुणा पुकार।।
भरा पूरा मेरा परिवार।
नहीं मिल रहा पर मुझे उपचार।।
राजा दशरथ बहुत भले थे।
राम चन्द्र को राजा बनाने चले थे।।
मंथरा ने ऐसा जाल बिछ्या।
अयोध्या में हाहाकार मचाया।।
मंथरा थी एक नारी।
उसकी मति गई थी मारी।।
उसने ऐसा राग फैलाया।
हरी-भरी वाटिका उजाड़ी।।
राम चन्द्र वन को गये।
दशरथ ने प्राण गवायें।।
कोई युक्ति काम न आई।
बिगड़ी बात बनी नहीं भाई।।
पर मंथरा को मिला क्या।
आज भी सब उससे नफरत करतें है।।
कोई भी माता-पिता, कन्यायें।
का नाम मंथरा नहीं रखते हैं।।
सभी नारियों को इससे।
सीख लेनी चाहिए।।
परिवार में विघटन का बीज।
कभी नहीं बोने चाहिए।।

नवल चौरसिया

चुनावी बुखार

चढ़ने लगा चुनावी बुख़ार देखो
कैसे हो रहे घात प्रतिघात देखो
मर्यादायें हो रही तार-तार देखो
अपने ही अपनों का कर रहें संहार देखो
सुरजेवाला सा वफादार देखो
जनेऊधारी हिन्दू जाति बनाई देखो
जनेऊ पहने न तीज त्योहार मनाते
फिर भी अपने को हिन्दू कहलाते
भैय्या दूज को बहना घर नहीं जाते
रक्षा बन्धन पर राखी नहीं बंधवाते
कैसी उल्टी गंगा बह रही भाई
भाई को जिमने बहना दौड़ी चली आई
भाई बहन का अजब गजब प्यार देखो
चढ़ने लगा चुनावी बुख़ार देखो
शेरे बब्बर रहा दहाड़ देखो
ऊँट के नीचे आया पहाड़ देखो
बुआ-बबुआ का चुनावी प्यार देखो
कर दिया हाथी को साइकिल पर सवार देखो
चाचा भतीजे की रार देखो
पिता पुत्र की तकरार देखो
कैसी बह रही चुनावी बयार देखो
बबुआ नहीं मंझे खिलाड़ी है
पहले पंजा मरोड़ा अब हाथी की बारी है
सत्ता के लिए गठबंधन बना रहे
कैसे कैसे उपाय लगा रहे
यह सरकार बेकार जनता को बता रहे
हमारी सरकार बनाओ गुहार लगा रहे
जनता बहुत समझदार, होशियार है
भले-बुरे का उसकी विचार है
सरकार से उसको बहुत प्यार है
किसी और सरकार की नही दरकार है
वह फिर कमल खिलाएगी
मोदी की सरकार बनाएगी
ऐसा है सबका विचार देखो
चढ़ने लगा चुनावी बुख़ार देखो

नवल चौरसिया

कोयल

कोयल मीठी वाणी वाली है
पर अंदर से भी काली है
यह तो बड़ी सयानी है
कौवे की भी नानी है
कौवे के घोंसले को
यह अपना बताती
चुपके से उनमें
अपने अण्डे दे आती
सयाने कौवे उनको
अपना समझ लेते हैं
दिन रात लग कर
उनको सेते हैं
जब चूजे निकल आते हैं
उनको यह खिलाते पिलाते हैं
पाल-पोष कर उनको
उड़ना सिखलाते हैं
इस तरह माँ-बाप
का कर्तव्य निभाते हैं
बड़े होकर चूजें
फुर्र हो जाते है
कौवे बेचारे
हाथ मलते रह जाते हैं
यह सिलसिला तो
चलता ही रहेगा
कोयल के मकड़जाल में
कौवा फंसता ही रहेगा।

नवल चौरसिया

मोदी तथा योगी

मोदी और योगी की जोड़ी
राम कृपा धरा पर है आई।
मोदी देश के नायक है
योगी प्रदेश के मुखिया है भाई।।
महिमा इनकी देश विदेश
क्या गगन तक है छाई।
नेतृत्व में इनके भारत में
उत्थान की लहर है आई।।
इन दोनो की अगुआई में
चतुर्दिक भारत का परचम लहराया है।
सबका साथ सबका विकास
इनकी तरु तरु में छ्या है।।
कामना भारत आत्म निर्भर बन जाय
सोने की चिड़िया कहलाये।
दूध दही की नदियां बहाये
खोया गौरव वापस पाये।।
आओ हम सब मिलकर
इनका उत्साह बढ़ाये।
उत्तर से दक्षिण पूरब से पश्चिम
तक इनकी विजय पताका फहराये।।

नवल चौरसिया

वक्त की नजाकत

जो वक्त की नजाकत
पहचान न पाया
जिसने मौके का
फायदा न उठाया
उसके हाथ कुछ न आया
उसने जीवन व्यर्थ गवांया
अन्ना जी आन्दोलन चलाया
केजरीवाल जी ने साथ निभाया
फिर वख्त की नजाकत भांपी
आम आदमी पार्टी बनाया
अन्ना जी से नाता तोड़ा
राजनीति से अपने को जोड़ा
झाडू चुनाव चिन्ह अपनाया
जनता खूब रास आया
इलेक्शन लड़ा विरोधियों को हराया
पूर्ण बहुमत से सरकार बनाया
स्वयं मुख्य मंत्री बने
सिसोदिया जी को उप प्रधान बनाया
जड़े मजबूत हुई तो पैर फैलाया
पंजाब में परचम लहराया
अगर ऐसे ही चलता रहा
आम आदमी पार्टी का कद बढ़ता रहा
तो एक दिन ऐसा आयेगा
जहाँ में झाडू का परचम लहरायेगा।

नवल चौरसिया

2024 चुनाव

2024 में है चुनाव होने वाले
हम भी हैं चुनाव लड़ने वाले
मेरे कुछ मुद्दे हैं
जिनका लाभ उठाना है
इन मुद्दों को जन
जन तक पहुचाना है
यह मुद्दे सबकी
भलाई के लिये है
बढ़ रही अराजकता
को मिटाने के लिए है
मुद्दे :- विशिष्ट नागरिकों की सुविधाऐं बहाल की जायेगीं।
बढ़ती मंहगाई पर प्रभावी लगाम लगाई जायेगी।
इन्कम टैक्स, बिजली, पानी बिल आधा करेंगे।
हाऊस टैक्स को बिल्कुल समाप्त करेंगे।
वरिष्ठ नागरिकों को चारो धाम की यात्रा करवायेंगे।
बुजुर्ग मुस्लिम भाईयों बहनों को हज यात्रा करवायेंगे।
देशी शराब बनाने को लघु उद्योग बनायेंगे।
इससे जहरीली शराब बनना बन्द हो जायेगी।
जनता को अच्छी और सस्ती शराब मिल पायेगी।
हम कसम खाते हैं सारे वादे पूरे करेंगे।
जनता जनार्दन का हर संताप हरेंगे।

नवल चौरसिया

उपासक

देवी देवताओं की यह फौज कहाँ से आई
आप किसके भक्त हैं बतलायें भाई
राम नवमी में सब राम मय हो जाते हैं
कृष्ण जन्माष्टमी में सब श्याम भक्त हो जाते हैं
शिव रात्रि में बम भोले चिल्लाते हैं
नव रात्री में देवी के गीत गातें हैं
नव दिन व्रत रह पशुओं की बली चढ़ाते हैं
देवी का प्रसाद मान मदिरा पीते मांस खाते हैं
बकरे घिघियाते अपनी ख़ैर मनाते हैं
जोर जोर से चिल्लाते हैं
मानो कह रहे हो यह कैसा रिवाज है भाई
आपकी बल्ले-बल्ले हमारी जान पर बन आई
मंगलवार हनुमान जी याद आते हैं
शनि देव को शनिवार दिन तेल चढ़ाते हैं
गणेश लक्ष्मी का नम्बर दीपावली में आता है
यह लोगों को खूब भाता है
ब्रह्मा, विष्णु, महेश का नम्बर तो आता नहीं
इनको कहीं पूजा जाता नहीं
दीपावली धूम धाम से जाती है मनाई
अब बतलायें आप किसके उपासक है भाई

नवल चौरसिया

धत

हादसा, हाँ मैं इसको हादसा ही कहूँगा क्योकि उसके बाद हमलोगों का जीना मुहाल हो गया। सबकुछ उलट पलट गया। हमलोग ग्रामीण वातावरण में पले व बड़े हुए। मैं इण्टर का छात्र था और वह हाई स्कूल की। हमलोग निःसंकोच एक दूसरे से मिला करते थे। कहीं कोई कलुष न था और मन में कोई खोट था। हमदोनो ही वयः संधि पर थे। परन्तु होनी को शायद कुछ और ही मंजूर था।

एक दिन हमलोग गाँव के चबूतरे पर कंचे खेल रहे थे। वह भी एक मकान की चौखट पर बैठकर बड़ी तन्मइता से हमलोगों का खेल देख रही थी। कभी किसी के अच्छे निशाने पर तालियाँ बजाकर उसका उत्साह वर्धन करती। न जाने किस मनहूस घड़ी के वशीभूत होकर मैं एकटक उसके मुखार बिन्द की ओर अपलक देखने लगा। अकस्मात् कहीं उसने मेरी ओर देखा। हमदोनो की आँखे चार हुई। वह हड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई। उसके चेहरे पर लज्जा युक्त लालिमा दौड़ गई और वह ''धत'' कहकर भाग खड़ी हुई। मैं ठगा सा उसको कुलांचे भरते हुए देखता रहा। मेरे पास शब्द नही है कि मैं उसकी उस समय की सुन्दरता का बखान कर सकूं।

परम आदरणिय स्व0 श्री दद्दा 'मैथलीशरण गुप्त' जी ने ठीक ही लिखा है कि :-

'एक क्षण इस जीवन में ऐसा भी आता है।
एक पल में जो नई सृष्टी रच जाता है।।
मुग्धा एक पल में मध्या बन जाती है।
यौवन का बोध तो अकस्मात ही होता है।।

हिन्दी वर्णमाला के दो अदना अक्षरों से बने उस छोटे से शब्द 'धत' ने हमलोगो के जीवन में क्या क्या गुल खिलाए विस्तार से लिखना अनावश्यक है। संक्षेप में समझ लीजिए कि हम दोनो ही दिवाने हो गये थे। एक दूसरे को देखे बगैर चैन नहीं मिलता। हमलोगो ने लाख पापड़ बेले परन्तु जातिय बंधन नहीं तोड़ सके। कठोर समाजिक व्यवस्था के आगे हमलोगों को झुकना ही पड़ा। परन्तु इसका खामियाजा हमलोगो को ताउम्र भुगतना पड़ा। किसी ने ठीक ही लिख है की 'लम्हों ने ख़ता की और सदियों ने सजा पाई।'

प्रथम प्यार अमिट रहता है। लाख भुलाने पर भी प्रथम प्यार की खट्टी-मीठी याँदें हृदय को सालती रहती हैं। कहा गया है कि :-

''ता उम्र कसक बन जिगर में चुभता रहा।
पहली नज़र का प्यार भुलाया नहीं जाता।''

नवल चौरसिया

'र' की महिमा

'र' से मेरा तात्पर्य देश की प्रमुख जासूसी संस्था से नहीं बल्की हिन्दी वर्णमाला के एक अदना अक्षर से है जो अपने आपमें अद्वितीय है। यह अक्षर अदना होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा प्रतिष्ठित हैं। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं की यह अक्षर आलोकिक है। हिन्दी वर्णमाला की रचना के समय लगता है स्वयं ब्रह्मा ने कमल की नोक पर बैठकर इसको धरा पर उतारा है। इसकी सम्पूर्ण महत्ता का वर्णन कल्पना से परे है। यह अक्षर जिस किसी के भी नाम रहता है। चाहे वह मानव हो चल अचल वस्तु हो – उसकी महिमा बढ़ाता है।

इसकी महत्ता तथा प्रतिष्ठा का अन्दाजा केवल इस बात से लगाया जा सकता है कि जब-जब किसी अलौकिक शक्ति अवतार के रुप में धरा पर जन्म लिया तब उनसब दैवी शक्तियों के नामों में कहीं न कहीं ''र'' अक्षर का समावेष अवश्य है। यह विधी का विधान ही कहा जायेगा कि देश के चार प्रमुख धर्मावलम्बियों 'हिन्दू', 'मुस्लिम', 'सिक्ख', 'ईसाई' के इष्टों (राम, रहीम, अल्लाह-ओ-अक्बर, वाहे गुरु, गुरु ग्रन्थ साहेब और जीजस क्राइस्ट) के नामों 'र' अक्षर विद्यमान है। यही नहीं उल्लेखित चार धर्मावलम्बियों में एक को छोड़कर शेष के धर्म ग्रन्थों के नाम में भी 'र' अक्षर का समावेश है। रमायण, कुरान शरीफ तथा गुरु ग्रन्थ साहेब।

और देखिये कैलेण्डर के अनुसार जहां वर्ष के आठ महिनों के नामों में 'र' अक्षर है वही हिन्दी भाषानुसार सप्ताह के प्रत्येक दिनों में 'र' अक्षर आया है। मर्यादा पुरुषोत्तम् राम तथा रावण की बात तो जाने दीजिए। सद्कर्म के प्रतीक यूधिष्ठिर तथा विषमताओं के प्रतीक दुर्योधन दोनों के ही नामों में 'र' अक्षर है। प्रकृति, प्रद्त्त सभी जीवनदायक श्रोतों सूर्य, चन्द्र, प्रकाश, अन्धकार आदि के नामों में 'र' अक्षर आया है। सृष्टिकर्ता तथा संहारकरुपी भगवान शंकर के नाम में भी 'र' अक्षर है। भूलोक की बात छोड़िये परलोक भी 'र' अक्षर से अछूता नही है। स्वर्ग, नर्क, सुर, असुर सभी में 'र' अक्षर का समावेश है।

प्राचीन काल में हर प्रतिष्ठित व्यक्ति के नाम में भी चाहे वह किसी भी धर्म, जाति अथवा सम्प्रदाय का क्यूं न हो आप 'र' अक्षर अवश्य पायेंगे। इसमें लिंग भेद भी नही है। बतौर मिसाल आप नूरजहाँ को ले लीजिये। अनारकली को ले लीजिये। बाबर के नाम के अन्त में 'र' अक्षर है। कितनी विडम्बना है कि मुगल साम्राज्य के अन्तिम शासक के रुप में जिस शक्सियत को जाना जात है। उसके नाम में भी 'र' अक्षर है। कबीर के भजन आज भी विश्व के लिए खोज का विषय बने हुए हैं। प्राचीन काल जाने दीजिये आधुनिक काल देखिये। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के नाम में 'र' अक्षर तो है ही उनकी धर्म पत्नी के नाम में भी इसका समावेश है। यह मात्र संयोग ही कहा जायेगा कि राष्ट्रपिता के हन्ता नाम में भी 'र' अक्षर विद्यमान है।

नवल चौरसिया

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति होने का गौरव जिस हस्ती को प्राप्त हुआ उसका नाम भी 'र' अक्षर से प्रारम्भ होता है। इतना ही नहीं अबतक जितने भी राष्ट्रपति हुए हैं। उनमें से एक दो अपवादों को छोड़कर सबके नाम में 'र' अक्षर है। यह मात्र संयोग ही कहा जायेगा कि अबतक जितने भी प्रधानमंत्री हुए हैं उन सबके नामों में भी 'र' अक्षर अवश्य है। वर्तमान प्रधानमंत्री के सत्तारोहन के पश्चात अखबारों में लिखा गया कि वह देश के ऐसे प्रधानमंत्री है जिनके नाम में 'र' अक्षर नहीं है। यह सरासर गलत है क्योकि नाम में न सही उपाधी में तो 'र' अक्षर है। बताते चलें कि उनका पूरा नाम डा0 मनमोहन सिंह है।

लगभग सभी देव नामों विशिष्ट साधू सन्तों के नाम में भी 'र' अक्षर पाया जाता है। जैसे अमरनाथ, वद्रीनाथ, केदारनाथ तथा रामेश्वरम। साधू सन्तों ने महामण्डलेश्वर शंकराचार्य जी, आचार्य रजनीश, आसाराम बापू जी, योग गुरु बाबा राम देव तथा निर्मल बाबा आदि।

चलचित्रों की दुनियां में चलिए। सभी उच्च शिखर पर पहुँचे नायक नायकों के नामो में 'र' अक्षर विद्यमान है। उदाहरण के तौर पर राजकुमार, दिलीप कुमार, राजेन्द्र कुमार, किशोर कुमार, राज कुमार खलनायकी करने वाले स्व0 प्राण का नाम सम्मान लिया जा सकता है। नायकों में सुरैया स्व0 नरगिस दत्ता आदि के नाम प्रमुख है।

क्रीड़ाजगत में क्रिकेट को ले लीजिए जिन खिलाड़ियों के नामों में 'र' अक्षर का समावेश है उनका वर्चस्व है बतौर उदाहरण सुनील मनोहर गावस्कर, विराट कोहली, सुनील शास्त्री, सय्यद किरमानी, युवराज सिंह आदि इतने नाम हैं की गिनना मुश्किल है। विदेशी खिलाड़ी भी 'र' अक्षर के प्रभाव से वंचित नहीं है। बतौर उदाहरण रिकी पोंटिंग, माइकल क्लार्क, अरविन्द कालीचरण, विवियर्ड रिचर्डस, ब्रायन लारा, अर्जुन राणातुंगा, सनत् जयसूर्या, महेला जयवर्धने, कुमार संगकारा आदि। इतने नाम है कि लिखे नहीं जा सकते।

यह है 'र' अक्षर की महत्ता। इसकी महिमा में वर्णमाला के दूसरे अक्षर 'ट' के मिल जाने के पश्चात चार चाँद लग गये हैं जैसे मिनिस्टर, कलेक्टर, इन्सपेक्टर तथा डाक्टर आदि।

धन्य है 'र' अक्षर और इसका प्रभाव।

नवल चौरसिया

त्रासदी

मैने एक मध्यम वर्गीय कृष्क परिवार में जन्म लिया है। मेरे पिता भी दो भाई थे। उनके अनुज यानी मेरे काका श्री खेती के अलावा वानिकी भी करते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि मेरा अच्छा खाता-पीता परिवार था। मेरा गाँव प्रदेश की राजधानी से लगभग 25 किमी. की दूरी पर लबे सड़क है। आने-जाने के पर्याप्त साधन है। मेरी शिक्षा व्यवस्थित ढांचे व कठिन अनुशासन में पूरी हुई। गाँव से रोज आने जाने के कारण मैने अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर ही केन्द्रित रक्खा। इसका परिणाम अच्छा ही हुआ। मैने लॉ किया और एक पेशेवर वकील बन गया। अब मेरे परिवार वालों को मेरा घर बसाने की चिन्ता हई। उन्होंने बगैर मुझसे पूछे-तांछे मेरा रिश्ता करीब के एक अन्य जनपद में तय कर दिया। मैं अभी विवाह बन्धन में बन्धना नहीं चाहता था। परन्तु चाहकर भी मैं विरोध करने का साहस नहीं जटा सका। मेरे मौन को स्वीकृति मान एक शुभ लग्न में मेरे परिवार वालों ने मेरा विवाह कर अपना दायित्व पूरा किया। कहने को तो मेरा विवाह शुभ लग्न व पंडितों की अगुवाई में हआ था। परन्तु वह शयद बहुत ही अशुभ घड़ी थी क्योंकि मेरा वैवाहिक जीवन पूर्णतया असफल रहा। पत्नी एक बार जो मायके गई तो वहीं की होकर रह गई और मेरे बड़े बुजुर्गों के लाखों प्रयासों के बाद भी हमलोंगो का सम्बन्ध विच्छेद हो गया। गाँव में रहने के कारण मैं अपने पेशे को पर्याप्त समय नहीं दे पा रहा था। वैसे भी गाँव में रहना अब कठिन लग रहा था। भाईयों व भाभियों के यदा-कदा ताने और परिवार के बड़े-बूढ़ों की वक्र दृष्टि सहना असहज हो गया था। अतः मैने राजधानी में ही अपना डेरा जमाया और अपने पेशे के प्रति पूर्ण समर्पित हो गया।

ईश्वर की अनुकम्पा मेरी वकालत चल निकली और ऐसी चली की पुछो मत। यदि मैं यह कहूँ कि मेरी पांचों उँगलिया घी तथा सर कढ़ाई में तो अतियोक्ति न होगी। इसी बीच मेरा परिचय एक सजातीय तरुणी जो अध्यापिका थी से हुआ। वह मुझे अती व सुंदर लगी। मन के किसी कोने से आवाज उठी कि बेटा यही तुम्हारी जीवन संगिनी बनने लायक है। मैंने इसी अवाज को गाँठ बांध लिया। साधारण परिचय कब प्रगाढ़ प्रेम में बदल गया पता ही नहीं चला। इस प्रगाढ़ प्रेम ने क्या-क्या गुल खिलाए और हम किन किन परिस्थितियों से रुबरु हुए इसका सविस्तार वर्णण अनावश्यक है। हम लोगों के वैवाहिक जीवन में कुछ अड़चने थी कुछ पारिवारिक विरोध जो अकारण थे। लेकिन हम लोगों के संकल्प के आगे सब नतमस्तक हुए और हम लोग एक दिन वैवाहिक जीवन में बंध गये। हम लोगों के परिवार वालों ने अनचाहे ही सही मगर रिश्ते को अंगीकार किया।

अब एक नये जीवन का दौर शुरु हुआ। मैने अपनी पत्नी को कभी भी उनके अध्यापन कार्य से नही रोका। अब लगता है की यह निर्णय बहुत ही दूर अंदेशी था। हम लोगों का जीवन बहुत ही सुखमय व्यतीत हो रहा था। किसी भी प्रकार के कलेश की छाया भी न थी। समय चक्र चलता रहा। हम लोगों के चार संताने 2 पुत्र एवं 2 पुत्रियाँ उत्पन्न हुई। चारो संतानो को हम लोगों ने असीम लगन से पाला। संतानो भी एक से बढ़कर एक। सब हष्ट-पुष्ट एवं सुंदर और ज़हीन। पुत्रिया ऐसी कि लोग देखते ही रह जाये। हम लोगों के सुखी परिवार को कब ग्रहण लगा हम लोगों को पता ही न चला। हुआ यह की मेरी अर्धागिंनी के शरीर पर एक सफ़ेद हो

नवल चौरसिया

गया जिसके पहले हम लोगों ने गम्भीरता से नहीं लिया। हम लोगों के कान तब खड़े हुए जब उस छोते से धब्बे ने अपना आकार बढ़ाना शुरु किया। जले पर नमक यह की सफ़ेद दाग शरीर के अन्य भागों यहाँ तक की चेहरे पर भी फैल गया। तमाम इलाज हुआ हर पैथी का इलाज हुआ झाड़ फूक हुई पानी की तरह पैसा बहाया परंतु नतीजा शुन्य। मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की वाली कहावत चरितार्थ हुई और उस मनहूस मर्ज ने मेरी पत्नी की काया पर अपना आधिपत्य जमा लिया।

हम लोग इससे चिन्ति तो अवश्य रहते थे परन्तु हताश व निराश कभी नहीं हुए थे। चिन्ता स्वयं में एक असाध्य व्याधि हे ऊपर से निराशा हताशा व कुंठा। कहते हैं कि चिता तो प्राण विहीन प्राणी को जलाती है परन्तु चिता तो जीवित आदमी को तिल तिल कर जलाती है। किसी ने लिखा है कि :-

''चिता डायन उर ब्सी झुर झुर पिंजर होय
जाके मन चिंता बशी वेदराज का होय।''

उल्लिखित उदगार हम लोगों पर बिल्कुल फिट बैठ्ते है जिसका प्रमाण हम लोगों कि दिनोदिन गिरती हुई सेहत है। बच्चों के भविष्य की चिन्ता हम लोगों को खाए जा रही है। एक तो चिन्ता ऊपर से हताशा व कुंठा हम लोगों के जीवन को अभिशप्त किए हुए है।

जाहिर है कि केवल पत्नी के शरीर पर के सफ़ेद दाग इन सब व्याधियों का एकमात्र कारण नहीं हो सकते। हम लोगों कि विपत्ति का मूल कारण है इस रोग से जुड़ी हुई कुछ मान्यतायें व भ्रान्तियां जिनके चलते हम लोग अपनी पुत्रियों का विवाह सस्ंकार नहीं कर पा रहे हैं। लड़कियाँ सुशिक्षित,आर्क्षक एवं ग्रह कार्य में निपुण हैं। कई जगह से बात चली लड़के वाले आये उनकी बाकायदा आवभगत हुई परन्तु बात बनते-बनते बिगड़ गई। कारण पत्नी के शरीर के सफ़ेद दाग। अब इसका क्या इलाज। दाग रातों-रात तो मिटाये नहीं जा सकते और इस बात को छिपाकर हम लोग कहीं भी रिश्ता लड़कियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए करना नहीं चाहते। हम लोग चाहते थे कि लड़कियों के हाथ पीले हो जाये तो फिर लड़कों की सोचें। परतुं शायद यह साध आधुरी ही रह जायेगी क्योंकि इस समस्या का समाधान कहीं भी नज़र नहीं आ रहा है।

ऐसा नहीं है कि इस प्रकार की त्राषदी झेलने वाले हम इकलौते है। इस प्रकार की त्राषदी झेलने वाले न जाने कितने परिवार होंगे परन्तु किसी ने जहां तक में समझता हूं समाज के सामने अभी तक इसे रखने कि हिमाकत नहीं की है। कारण चाहे जो भी हो। मैं समाज के सामने अपना दुखड़ा इसलिए रो रहा हुँ कि शायद कोई सज्जन/परिवार ऐसे हो जो सफ़ेद दाग से जुड़ी मान्याताओं व भ्रान्तिओ को न मानते हो। यदि कोई सज्जन/परिवार ऐसे है और उनके विवाह योग्य पुत्र या पुत्रियां हैं तो मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं। हो सकता है इसी माध्यम से हम लोग इस त्राषदी से निज़ात पा सकें। नहीं तो यह त्राषदी तो ता जिंदगी झेलनी है।

नवल चौरसिया

हम किसी से कम नहीं

खट्टी मीठी यादें छोड़कर फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल प्रतियोगितायें स्पेन की ताजपोशी कर चार सालों के लिए नेपथ्य में चली गई। यह विश्वकप अपनी कुछ विशिष्ट विशेषताओं के कारण सदैव याद किया जायेगा। उन विशिष्ट विशेषताओं में एक है पाल बाबा की भविष्यवाणियाँ। आखिर यह पाल बाबा है कौन ? आइये आपका इनसे संक्षिप्त परिचय करा दें।

पाल एक आक्टोपस (आठ आंगो वाले समुद्री जीव) का नाम है। जर्मनी की एक विशालकाय जीवशाला में यह रह रहे है। सटीक भविष्यवाणियों के चलते यह रातों रात जहाँ एक और अखबारों और चैनलों की सुर्खियाँ बन गये वहीं दूसरी ओर जर्मनी के सबसे विलेन के रुप में इनका नाम अभरा।

आपकी जिज्ञासा कह भी होगी कि समुद्री जीव होकर भी यह भविष्य वक्ता कैसे हो गये। तो बन्धुओं इनके पालने वाले खेल के परिणाम की अग्रिम जानकारी के लिए प्रतिद्वन्दी देशो के नामों को दो छोटे-छोटे बाक्सो पर लिखकर पाल बाबा के अक्वेरियम में डाल देते थे। पाल बाबा जिस बाक्स को अपनी भुजाओं में लपेट लेते या उस पर बैठ जाते उसी देश को विजय श्री प्राप्त होती। यह भविष्यवाणियाँ विश्वकप फुटबाल के अन्तिम मैच तक सटीक रही।

पाल बाबा की इस अभूतपूर्व प्रतिभा ो देखते हुए हमने भी कुछ करने की ठानी। हमने आगा न सोंचा न पीछा और दो मुन्ना भाइयों को मैदाने जंग मे अतार दिया। प्लान के तहत एक ने प्रचार करना शुरु किया कि उसका तोता भी भविष्यवक्ता है और सटीक भविष्यवाणी करता है। उसकी अभी तक सभी भविष्यवाणियां शत् प्रतिशत सही हुई है। कुछ इसी प्रकार का प्रचार हमारे दूसरे पहलवान ने अपने आकर्षक ढंग से सजाये गये बैल के विषय में किया। हमारे दोनो भविष्यवश्कताओं काा यथोचित प्रचार व प्रसार हुआ। दोनो रातो रात स्टार बन गये और चैनलों पर आने लगे।

परन्तु उनकी भविष्यवाणियों ने तमाम सट्टेबाजों को औंधे मुह गिराकर दिवालिया बना दिया। दोनों धंधेवाज भविष्यवक्ता तमाम जनता के सपनों को चकनाचूर कर जाने कहाँ अर्न्तध्यान हो गए।

जो हुआ सो हुआ। परन्तु हमने भी अपना झंडा उंचा कर न केवल बदनाम हुए तो क्या नाम न होगा वाली कहावत चरितार्थ की बल्कि सारी दुनिया को दिखा दिया कि हम किसी से कम नहीं।

इकन्नी

एक दिन मेरे पौत्र ने जिज्ञासावश मुझसे पूछा कि ''डैड-(अपने पापा की देख-देखी यह भी मुझे डैड ही कहता है) यह इकन्नी क्या होती है ? और कह पचास रुपये के बराबर कैसे हुई'' (एक समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था कि पुरानी इकन्नी का मूल्य आज कल के 50 रुपये के बराबर है।)

मुझे लगा कि यह केवल मेरे पौत्र कीी ही जिज्ञासा नहीं है वरन तमाम बच्चों की है जो पूर्व में प्रचलित मुद्रा से अनभिज्ञ हैं। उन सब की जिज्ञासा शान्त करने हेतु मैने यह तुच्छ प्रयास कियाा है।

भारत में दशमलव प्रणाली 1 अप्रैल 1957 से लागू हुई। इस दिन से रुपया, आना तथा पाई का नवीनीकरण हो गया। शनैः शनैः मन, शेर, छटाक तथा गज, फुट, इंच का स्वरुप भी बदल गया। इनकी जगह किलोग्राम, लीटर तथा मीटर ने ले ली है।

दशमलत प्रणाली लागू होने से पहले जो मुद्रा प्रचलन में थी उस मुद्रा में अठन्नी, चवन्नी, दुवन्नी व इकन्नी आदि का प्रयोग किया जाता था। एक रुपये में 16 आने तथा चौसठ पैसे हुआ करते थे। अब 1 रुपये में 100 पैसे होते है।

रुपये के आधे भाग को अठन्नी व अठन्नी के आधे भाग को चवन्नी, चवन्नी के आधे भाग को दुवन्नी तथा दुवन्नी के आधे भाग को इकन्नी कहा जाता था। इकन्नी के बाद जो मुद्रा प्रचलन में थी उसका भी विवरण नीचे तलिका में दिया हुआ है।

1/2 रुपया = अठन्नी = 32 पैसे

1/4 रुपया = चवन्नी = 16 पैसे

1/8 रुपया = दुवन्नी = 8 पैसे

1/16 रुपया = इकन्नी = 4 पैसे

इकन्नी का आधा भाग अधन्ना यानी 2 पैसे, अथन्ना का आधा भाग = 1 पैसा यानी 4 पाई। 1 पैसे के आधे भाग को अधेला कहा जाता था।

1/2 इकन्नी = अधन्ना यानी 2 पैसा

1/4 इकन्नी = 1 पैसा

1/2 पैसा = अधेला

1/4 पैसा = 1 पाई।

पाई को पौली, दमड़ी व छदाम के नाम से भी जाना जाता था। उस समय सस्ते का जमाना था। इसलिए पाई की भी बकत हुआ करती थी।

अपने देश में कहीं-कहीं कौड़ी भी प्रचलन में थी। हालाकी कौड़ी मुद्रा नहीं है परन्तु इसका इस्तेमाल बतौर मुद्रा अवश्य किया जाता था।

आपकी जानकारी हेतु यह भी बतातें चलते है कि अपने भारत देश में रिजर्व बैंक की स्थापना 01/04/1935 में की गई। सन् 1938 में इस बैंक द्वारा 5 रुपये मूल्य का नोट छापा गया था। 1 रुपये का नोट सन् 1949 में जारी किया गया। 1 रुपये का सिक्का सन् 1956 में मुम्बई की टक्साल में ढाला गया। इसके पूर्व सन् 1946 से 1956 तक जो सिक्के

प्रचलन में उन पर किंग जार्ज का चित्र बना हुआ था। भारत में सिक्के ढालने की टक्साल मुम्बई, कोलकाता, हैदराबाद तथा नोयडा में स्थापित की गई है।

आपने 1 रुपये से लेकर 1000 रुपये तक के नोट पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के अतिरिक्त भांति-भांति के चित्र छपे हुए देखे है। आइये आपका इन चित्रों से भी परिचय करा दें।

1रुपये के नोट पर समुद्र से तेल निकालने वाली मशीन का चित्र बनाया गया है। 5रुपये के नोट पर खेत में हल चलाते हुए किसान की तस्वीर है। 10रुपये के नोट पर जंगली जानवरों जैसे शेर, हांथी व गैंडे के चित्र। 20रुपये के नोट पर पोट ब्लेयर, 50रुपये के नोट पर संसद भवन, 100रुपये के नोट पर पहाड़ व बादल, 500रुपये के नोट पर आजादी के आन्दोलन में गाँधी व उनके 11 साथियों (क्रांतिवीरों) तथा 1000रुपये के नोट पर तकनीकी, औद्योगिक तथा कृषि के चित्र छापे गये हैं।

अपने देश की भांति कुछ अन्य मुल्कों जैसे इंडोनेशिया, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका तथा मालद्वीप में प्रचलित मुद्रा को रुपया ही कहा जाता है।

अपने देश के नोंटो पर 'सत्यमेव जयते' तकनीक तथा विकास जैसे चित्रों की छपाई का दौर 1980 से प्रारम्भ हुआ है।

नवल चौरसिया

भ्रमणनामाः 1

जीवन पर्यन्त स्वस्थ एवं निरोग रहने का सरलतम उपाय है नियमित रुप से सुबह सैर करना। सुबह सैर करने वालों को मैने अपनी सोंच के अनुसार चार वर्गो में विभजित किया है। इनका क्रमानुसार विवरण देने से पहले मैं आपको उन लोंगो से मिलवाता हूँ जो अलसुबह से ही कार्यरत हो जाते है। इसी बहाने शायद उनकी सैर भी हो जाती है।

प्रातः घर से निकलते ही सर्वप्रथम मिलते हैं कचरे से कमाई कर घर चलाने वाले। इनको मैं खुदाई मद्दगार मानता हूँ। नवाबों के शहर लखनऊ में न जाने कितना कचरा निकलता है और न जाने कितने कूड़ा बीनने वाले हैं। इनमें भी पहले नम्बर पर वो दिखते हैं जो ट्राली रिक्शा में कचरे से मतलब की चीजें बटोर कर ले जाते हैं। दूसरे नम्बर पर हम उम्र लड़कियाँ व प्रोढ़ायें जो पीठ पर थैला लटकाये हंसते-हसाते काम में लगी रहती है। तत्पश्चात दिखते हैं लखके जो 2/3 की टोलियों में ज्यादातर प्लास्टिक व काँच की बोतलें वा अन्य सामान बीनते रहते हैं। यह देश का दुर्भाग्य ही है कि स्वतंत्रता के इतने दशकों के पश्चात भी इनके हालात जस के तस है। गोस्वामी तुलसीदास जी लगता है कि त्रिकालदर्शी थे। शायद इसीलिए यह लिख गये कि :-

''कोई नृप होय हमैं का हानी।
चेरी छाड़ ना होइबे रानी।।''

मैने इनको खुदाई मद्दगार यूँ ही नहीं कहा है। यदि ये लोग न होते तो आज शहर की सारी नालियां प्लास्टिक की पन्नियों से पट गई होती। नालियाँ क्या गोमती नदी भी पट गई होती। इतनी प्लास्टिक की पन्नियाँ बीन ले जाने के पश्चात भी नालियाँ अक्सर चोक जो जाती हैं। यदि ये ना उठाई जाती तो क्या हाल होता इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। इस स्थिति के जिम्मेदार आप और हम है। क्योकि हम अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक नहीं है। सड़क पर प्लास्टिक का क्या घर का सारा कचरा आप और हम ही तो फेंकते है।

दूसरे नम्बर पा आतें हैं घर पर अखबार पहुचाने वाले। जाड़ा, गर्मी और बरसात कोई भी मौसम क्यों न हो यह हमेशा मुस्तैदी से अपना काम करते रहते हैं। यह समय की पाबन्दी का कमाल है। कि पेपर वितरण में कभी विनम्ब नहीं होता। हमको इनसे नसीहत लेनी चाहिये।

प्रातः बहुत से परिवारों में विभिन्न कारणों से लोग जाग ही जातें हैं। कुछ के यहाँ पानी न आने की समस्या और कुछ के यहाँ डयूटी पर जाने वालों के लिए नाश्ते व खाने की व्यवस्था होने लगती है। ऐसे घरों के सामने से गुजरने पर यदा कदा ऐसी मनोग्राही सुगंध आती हैकि मुँह में पानी आ जाता है।

अल सुबह सैर पर निकलने वालों के पहले वर्ग में वह लोग आते है। जो वास्तव में प्रातः भ्रमण के लिए निकलते हैं। उनकी विशेषता यह होती है कि वह नाक की सीध मे चल गन्तव्य तक पहुँचकर उसी रफ्तार से वापस आते हैं। दूसरे तरह के भ्रमणकारी टोलियों में निकते हैं। अधिक्तर वह प्रौढ़ होते हैं। हसते बतियातें वह चलते हैं या एक स्थान पर बैठ कर वह वतियाते रहते हैं। महिलाऐं भी इनसे पीछे नहीं वह भी टोलियों में निकलतीं हैं। इधर उधर टहलकर एक स्थान पर बैठकर दीन दुनियाँ की बातें करती रहती हैं। कुछ युवतियाँ या तो दौड़ लगाती हैं या फिर जॉगिंग करती हैं और कुछ मोबाइल का भरपूर उपयोग करती दिखती हैं। शायद घर पर

बतियाने का मौका नहीं मिलता। तीसरे स्थान कुछ रंगीन मिज़ाज लोग जो बन टन कर सैर के बहाने नयनसुख भोगने निकलते हैं। इनकी एक विशिष्ट पहचान होती है। यह सदैव विलम्ब से निकल खरामा खरामा महीलाओं को घुरता हुए चलते हैं। इनका एक हाथ जेब में रहता है। सींग कटा कर बछड़ा बनना कोई इनसे सीखे।

अंतीम वर्ग में वह प्रौढ़ पुरुष महिलाये व बाल वृन्द आते है जो हाथ में प्लास्टिक की छोटी छोटी थैलियां लेकर महज़ फूल तोड़ने निकलते हैं। इनको मैं फूल चोर कहता हुँ। इनकी सैर की सैर हो जाती है और पूजा आदि के लिये फूल भी मिल जाते हैं। यह लोग चोरी के साथ सीनाजोरी भी करते हैं। मार्गों पर लगे हुए फूल वाले पेड़ तो इनके निशाने पर होते ही हैं मकानो के अन्दर लगे हुए फूल भी इनसे नहीं बचते। टोकने पर बुरा मानते हैं कहते हैं कि पूजा के लिये ही तो तोड़ रहे हैं। अब चोरी के फूल भगवान को अर्पित कर कौन सा पुण्य प्राप्त कर रहे हैं यह तो वही जाने।

नवल चौरसिया

दैव-योग

मेरा जीवन एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। प्रथम संतान होने के कारण मेरा जरुरत से ज्यादा ही लाड़ प्यार हुआ। पौराणिक कथा में वर्णित कलावती कन्या के समान मैं भी चन्द्रमा की सोलक कलाओं की भाँति बढ़ने लगी। वयसंधी पार करते ही मैं अपने माँ बाप की चिन्ता का वायस बन गई। मेरी समझ में यह बात नही आती कि आज कि युग में भी माँ बाप को उसके हाा पीले करने की चिन्ता क्यों सताने लगती है। मैं पढ़ लिख कर कुछ बनना नाम कमाना चाहती थी। बाप की लकुटिया बनना चाहती थी। मगर लड़कियाँ विशेष कर मध्यम परिवार की लड़कियों की भावनाओं को कौन समझता और तरजीह देता है। माता पिता लड़कियों को पढ़ा लिखा कर कुछ बनाने की उपेक्षा जल्द से जल्द उनके हाथ पीले करना मात्र अपना दायित्व समझते हैं। मेरे ताऊ श्री अपनी पुत्रियों के पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न करने के पश्चात कहा करते थे कि चलो भई हमने तो गंगा नह लिया। शायद कन्याओं के हाथ पीले करना ही उनके जीवन का परम लक्ष्य था।

वहरहाल मेरे घर वालों विशेषकर अम्मा व बाबूजी सब कुछ भूलकर मेरे लिए सुयोग्य वर तलाशकर जल्द हाथ पीले कर अपने उत्तरदायित्व निर्वाह में जुट गये। इसका प्रभाव मेरे मन मस्तिष्क पर पड़ना लाजमी था। ऊपर से मुंहबोली भाभियों एवं सहेलियों की हसीं ठिठोली। मेरा मन पढ़ाई में कम भविष्य के तानों बाने में अधिक लगने लगा।

पिताजी के प्रयास सफलीभूत हुए। एक जगह अच्छा घर और वर देख कर उन्होने मेरा रिश्ता पक्का कर दिया। क्या लेन-देन तय हुआ मुझे बताना उचित नहीँ समझा गया। विवाह की तैयारियों जोर शोर से होने लगी। सारी रस्में जैसे गोद भराई, बरिक्षा आदि सकुशल सम्पन्न हो गई बस अब बारात के स्वागत सत्कार और मेरे पाणिग्रहण संस्कार की औपचारिकता मात्र पूरी करना शेष रह गया था। धीरे-धीरे वह घड़ी भी आ गयी जिसका सभी को बेसब्री से इन्तजार था। नियत तिथि पर बारात का आगमन हुआ द्वार पर शहनाईयाँ गूंजने लगी। बारातियों का यथोचित स्वागत सत्कार हुआ। द्वार पूजा से लेकर जयमाल तक सारे कार्यक्रम विधि पूर्वक सम्पन्न किये गये। जयमाल के समय मैं हाथ में वरमाला लिए सहेलियों के साथ साड़ी में लिपटी गुड़िया सी मंच पर खड़ी थी। कनखियों से मैने देखा कि वर महोदय जयमाल के लिए मंच पर आने में आनाकानी कर रहे हैं। वह मित्र मंडली से घिरे हुऐ हैं। तथा उनको किसी बात के लिए लोग समझा रहे है। मैने यह देखा कि उनके पैर कुछ लड़खड़ा रहे हैं। मै कुछ असहज महसूस करने लगी। बमुश्किल तमाम दूल्हे राजा को उनके दोस्त लोग लगभग खींचते हुए मंच पर ले आये। उनके जैर व आवाज लड़खड़ा रही थी। मच पर आते ही उन्होने जो अप्रत्याशित कार्य किया उसकी किसी ने शायद कल्पना तक नहीं की थी। उन्होने कहा कि जब तक 50,000 रुपये नकद और एक मोटर साइकिल नहीं दी जाएगी वह वधु के गले में जयमाल नहीं डालेंगे। यह सुनकर मेरे काटों तो खून नही रहा सारे सपने धूल धूसरित हो गये। मन का सारा आक्रोश आँसू बन नयनों से झरने लगा। मेरे परिवार वाले लगभग पगला से गये थे। जनतियों में आक्रोश भड़क उठा। दूल्हे राजा को उनके सगे सम्बन्धियों व मित्रों ने समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु वह अपनी जिद पर अड़े रहे। मुझे अपना जीवन अंधकारमय लगने लगा। यदि मेरे परिवार

वाले व सहेलिया मुझे संभल न होती तो शयद मैं चक्कर खाकर गिर पड़ती। तभी न जाने किस ईश्वरीय प्रेरणवश मैने जोर से कहा कि ऐसे लालची व शराबी से मैं कदापि विवाह नहीं करुंगी और वरमाला तहस नहस कर फेंक दी। मेरे इस उद्घोष तथा कृत्य ने जलती आग में घी का काम किया। स्थिति अत्यंत विष्फोटक हो गई। कुछ जनाती बारातियों को मारने पीटने दौड़े। दूल्हे मियां को दो चार हाथ पड़ भी गये। बाराती इधर-उधर जान बचाकर भागने लगे। सारी व्यवस्था भंग हो गई। इतने में वहाँ पुलिस आ गई शायद किसी बाराती ने पुलिस को झगड़े की सूचना दे दी थी। पुलिस के आगमन से ही सन्नाटा छा गया। पुलिस दोनो पाक्षों के बुजुर्गो को अपने साथ थाने ले गई और समझौता कराया। समझौते के फलस्वरुप वर पक्ष द्वारा लेन-देन की रकम लौटानी पड़ी व खान-पान का खर्चा अलग से भरना पड़ा।

बारात बैरंग वापस जाने की तैयारी में लगी थी कि एक सुदर्शन युवक ने बुजुर्गो से मंत्रणा कर मेरे पिता श्री से मेरा हाथ मांगा तथा उसी मण्डप में विवाह करने की इच्छा प्रकट की। पिता जी को शायद मुंह मांगी मुराद मिल गई। इसमें सभी की सहमति तथा मेरी मौन स्वीकृति भी थी। इस अकल्पनिय विवाह ने वहाँ का सारा परिदृश्य ही बदल दिया। मंगल गीत गाये जाने लगे तथा मंत्रोचारण के बीच मेरा पाणिग्रहण संस्कार विधि विधान से सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन सारे समाचार पत्रों ने इस समाचार को प्रथम पृष्ठ पर छापा तथा मेरी दिलेरी की भूरि-भूरि प्रशंसा की यहाँ तक लिख कि यदि मुठ्ठी भर भी लड़कियां ऐसी हिम्मत दिखाऐं तो समाज में कैंसर जैसी फैलती दहेज प्रथा व शराब खोरी स्वतः समाप्त हो जाएगी तथा एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा।

एक लड़कि ने पराश्रित, अवला और न जाने कितने ऐसे विश्लेषणों को नकार असहाय और बेचारगी का भाव त्याग जिस अद्भुत व बुलंद हौसले और अत्मविश्वास का परिचय दिया। वह अनुकरणीय है- दहेज लोभियों व शराब खोरों को इससे सबक लेना चाहिए व सावधान हो जाना चाहिए।

नवल चौरसिया

बात का बतंगड़

एक प्रेमी ने अपनी प्रेमिका से पूछा कि तुमसे अपनी शादी के बारे में बात करने के लिए मैं तुम्हारे पापा जी के पास कब आऊं। प्रेमिका ने बड़े भोलेपन से जबाब दिया ''जब अनके पैरों में जूते न हो''

भाया इसके दो मतलब निकलते हैं।

पहला – शादी की बात करने यदि रात में जल्दी आओगे तो पिता जी इतने जूते मांरेगे कि तुम्हारी चांद गंजी हो जाएगी।

दूसरा – यदि घनी रात में आओगे तो बात बन जाएगी। देर रात में पिता जी क्या कोई भी जूते नहीं पहनता है।

इतनी बारीक बात मियां मजनू की समझ में नही आई। प्रेमिका की बात सुन प्रेमी घबरा गया। उसके माथे पर पसीना आ गया। उसने अपनी गर्दन ख़ुजलाई, ज़ुल्फे सहलाई और बोला 'भाड़ में गई सगाई। हम तुम पर ऐसे ही मरते रहेगे, रुप रसपान करते रहेंगे।

जीवन ऐसे ही गुजर जाएगा। बड़ा मजा आएगा। प्रिये तुमने किसी फिल्म का यह गाना ता सुना होगा कि : 'बड़ा लुत्फ था जब कुवांरे थे हम तुम एक दूजे की आँखोके तारे थे हमतुम अज़ी बड़ा लुत्फ था जब कुंवारे थे हम तुम' प्रेमी की बेतुकी बातों पर प्रेमिका को बहुत गुस्सा आया उसने प्रेमी के गाल पर जोर का थप्पड़ लगाया और बोली

''प्रेम के लिए लोग जमाने से लड़ गये। एक तुम हो जो जूतों से डर गये।''

अभि के अभि यहाँ से दफा हो जाओ फिर कभी आना नहीं अपनी मनहूस शक्ल दिखलाना नहीं।

गली क्या मुहल्ले में भी नजर आ गये तो इतनी पिटाई होगी कि नानी याद आ जाएगी। मेरा क्या है मैं तुम्हारे बगैर जी लूंगी, पिता श्री जहाँ कहेंगे शादी कर लूंगी।

नवल चौरसिया

जय देवी

यह कोई बहुत पुराना वाक्या नहीं है। यही कोई 70 से 75 साल पहले की बात है। उस समय मैं गोरखपुर में राणा प्रताप इण्टर कॉलेज कक्ष 6 कस छात्र था। अकस्मात मेरे पिता जी का तबादला गोरखपुर से दिल्ली चाँदनी चौक शाखा हो गया। मेरे पिता श्री इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया आब (भारतीय स्टेट बैंक) में अधिकारी थे। तबादला उनके लिए कोई नई बात नहीं थी।

अचानक तबादला होने के कारण पिताजी को हमलोगों को पैत्रक गांव छोड़ना पड़ा क्योकि उस समय दिल्ली में पार्टीशन के कारण मकानो की बहुत मारा-मारी थी। मेरे कॉलेज के आस पास भी बहुत से शरणार्थियों ने डेरा डाल रखा था।

मेरा पैत्रक गांव जिला सीतापुर में है। इसका नाम इस्माइलपुर है। यह सीतापुर जंक्शन से लगभग 4/5 कि.मी. तथा लालबाग चौराहे से 1.5 कि.मी. की दूरी पर श्री श्यामनाथ ऑयल मिल के ठीक सामने बसा हुआ है। उस समय गांव के पास ईट भटठा था। अब तो बहुत कुछ बदल गया है। ईट-भट्ठे की जगह मण्डी परिषद बन गई है। तथा गांव का नाम बदल कर हरभजन नगर कर दिया गया है। यहाँ आने के पश्चात मेरा दाखिला राजा रघुवर दयाल इण्टर कॉलेज में हो गया तथा यहीं से मैने इण्टर किया।

मेरे गांव से लगभग 5/6 कि.मी. की दूरी पर सीतापुर महोली रोड से थोड़ा परे हटकर एक गाँव है 'चमखरि' जय देवी इसी गाँव में रहने वाले एक साधारण कृषक परिवार की लाडली बहु थी। जय देवी के परिवार में पति के अतिरिक्त केवल स्वसुर तथा अजिया सास-स्वसुर ही थे। जय देवी इन सब लोगो का बहुत ही ख्याल लखती थी।

कुछ आवश्यक कार्य हेतु जय देवी को कुछ दिनों के लिए पीहर जाना पड़ा। अभी उसको गये हुए 4 से 5 दिन हुए थे कि उसको खबर मिली कि उसे पति अस्वस्थ हो गये हैं। वह भागी-भागी पीहर से आयी तथा जी जान से पति की सेवा में जुट गई। परन्तु विधि का विधान ही कुछ और था। उसके आने के 2 से 3 दिन पश्चात ही एक दिन सायं काल की बेला में उसे पति गोलोकवासी हो गये। जय देवी तो जैसे संज्ञा शून्य हो गई। अभी उसकी उम्र ही क्या थी। मुश्किल से उसने 21/22 बसंत देखे होंगे।

पति के निधन के पश्चात कुछ देर तक तो वह आम औरतों की तरह रेती कलपती रही। फिर सब को चुप रहने को कह एक धार्मिक ग्रन्थ उठा लाई और उसको पढ़ने लगी। उसने रात्रि में ही सबको बता दिया कि पति के साथ ही वह सती हो जायेगी।

यह अप्रत्याशित बात थी। गाँव तथा उसके धरवाले सभी यह सुन कर सन्न रह गये। परन्तु कुछ समय पश्चात उन लोगों ने इसको जय देवी का क्षणिक उन्मान समझ कर नजरअन्दाज कर दिया। परन्तु जब जय देवी रातभर धार्मिक ग्रन्थ पड़ती रहीं तथा अपने निर्शाय पर उलट रही तब उन लोगों की तंद्रा टूटी। उन लोगों ने आपस में मंत्रणा की और यह निर्णय लिया कि जय देवी से कहा जाय कि पहले वह परीक्षा दे उसके पश्चात ही वह लोग असके संकल्प पर विश्वास कर पायेंगे।

इस निष्कर्ष पर पहुचने के पश्चात जय देवी के ददिया श्वसुर ने उसको बुला कर कहा कि बेटी गांव के सब बुजुर्ग चाहतें है कि पहले तुम परीक्षा दो तभी सभी को विश्वास होगा कि तुम

अपनी अपनी तपस्या में सफल होगी। जय देवी ने कहा कि आप लोग कैसी परीक्षा चाहते है। ददिया श्वसुर ने कहा बेटी तुम अपनी गदेली पर काजल पार कर दिखाओ तभी हम सब को विश्वास होगा।

जय देवी ने कहा कि ठीक है। इसके लिए मैं तैयार हूँ। अब से मुझे कोई भी छुयेगा नहीं। यह कह कर उसने अपने वस्त्र आदि निकलवाये। स्नान कर पूर्ण श्रंगार किया फिर एक दीपक जलाया। अब दिये की लौ प्रखर हो गई अपनी बाई हथेली उस लौ पर रख दिया। गांव के तमाम लोग दीदे फाड़ फाड़ कर जय देवी को देख रहे थे। उसके चेहरे पर सिकन तक न थी। अपितु एक अलौकिक तेज से उसका चेहरा दमक रहा था। गदेली पर पर्याप्त काजल बन जाने के पश्चात उसने सब लोंगो को दिखाया फिर उसने पहले यह काजल अपने पति की आंखों मे लगा कर अपनी आंखों में लगाया। फिर क्या था जंगल में आग की तरह यह बात फैल गई कि जय देवी सती होने जा रही है। गांव के गांव चिता स्थल पर पहुँच गये। चिता स्थल के करीब जो भी पेड़ थे उन सब पर नर झुण्ड ही दिखलाई पड़ रहे थे। उस समय इतनी सख्ती तो थी नहीं फिर भी पर्याप्त संख्या में पुलिस बल भी वहाँ पहुँच गया। उन लोगों ने चिता को उपने घेरे में ले लिया।

जय देवी के पति की अंतिम यात्रा घर से लगभग 4 बजे निकली। इसकी छवि ही निराली थी। जय देवी स्वयं आंचल में भरे हुए मखाने लुटाती चल रही थी। इतना हो हल्ला था कि पूछिये मत। लोग नांचते गाते ढोल नगाड़े बजाते सती के जैकारे लगाते चल रहे थे। चिता स्थल पहुँचने पर पुलिस ने अपना घेरा और सख्त कर लिया।

मृतक के शव को जब चिता की ओर ले जाया जा रहा था जय देवी आगे ही थी। पुलिस बल को मुखिया ने कहा कि देखिये हम लोग चिता में कतई आग लगाने नहीं देंगे। जय देवी ने उत्तर दिया कि मुझे आग वाग की आवश्यक्ता नहीं है। हो सके तो आप सब लोग मुझे अपना आशीष दे दें और चिता से थोड़ा और पीछे चले जायें तो अच्छा है।

इतना कह कर जय देवी चिता पर स्वयं चढ़ गई तथा अपने पति के सर को अपनी जांघ पर रख लिया। तत्पश्चात उसने सूर्य को एकटक देखते हुए अपनी दोनो गदेलियों को कसकर मसला ही था कि चिता चारो ओर से सवतः ही जलने लगी। सती जय देवी के जै जै कारों से असमान गूंज उठा। प्रत्यक्षदर्शी बतलाते हैं कि कुछ देर तक तो चिता से राम राम की आवाजें आती रहीं फिर जय देवी का्ा शरीर एक ओर लुढ़क गया। कुछ ही देर में सब कुछ समप्त हो गया रह गये सिर्फ चिता के अंगारे।

मैं तो अपने को बहुत ही भाग्यशाली समझता हूँ कि मैं कम से कम उस अपार भीड़ का एक हिस्सा तो था जिसने यह अभूतपूर्व मंजर देखा। मुझे ऐसा लगता है कि किसी दैविय शक्ति ने ही मुझे यह लिखने के लिए प्रेरित किया वरना इससे पहले मुझे यह सब वृत्तांत लिखने की बात तक मेरे दिमाग में नहीं आई। जबकी यह सब सन् 1650-55 के बीच घटित हुआ था।

अब वहाँ पर भव्य मन्दिर बन गया है। लोग आते है। दर्शन करते है। तथा विस्फारित नेत्रों से सती की गाथा सुनते तथा जयकारे लगाते हैं।

नवल चौरसिया

पुनर्जन्म

यह वाक्या लगभग 60-70 साल पुराना है। सीतापुर से कुछ ही दूरी पर एक गांव के कृषक परिवार में बालक का जन्म हुआ। जब वह बोलने चालने लगा तब उसने अपने जन्मदाता को जाकर कहा वह यह कहने लगा कि वह सीतापुर के नामचीन सर्राफ परिवार का सदस्य है तथा वहाँ उसकी पत्नी, पुत्र, भाई, बहन तथा परिवार की अन्य सदस्य रहते है। उसके माता पिता तथा गांव के लोगो ने उसको बहुत समझाया व बरगलाने का प्रयत्न किया परन्तु वह बालक अपनी जिद पर अड़ा रहा। जब उसने धान बो दिये कि मुझे सीतापुर ले कर चलो तथा मेरे परिवार से मिलाओ। तब असके माँ-बाप कुछ गाँव को साथ लेकर सीतापुर आये। यह बात जंगल में आग की तरह फैल गई। तमाम हुजूम इकट्ठा हो गया।

बालक के माँ-बाप ने उसको सीतापुर कोतवाली के सामने छोड़ कर उससे कहा कि यहाँ से तुम ख़ुद हम लोगों को अपने घर ले चलो। कोतवाली से उन सर्राफ के घर पहुचनें का एक छोटा रास्ता सिविल अस्पताल के पीछे की ओर बनी हुई सड़क से है। दूसरा रास्ता लालबाग चौराहे से होकर जाता है।

कोतवाली से सिविल अस्पताल महज चंद कदमों की दूरी पर है। बालक ने वही रास्ता पकड़ा और उछलता कूदता सर्राफ के मकान की ओर चल पड़ा। पीछे पीछे लोगो की भीड़ भी उसका अनुसरण कर रही थी। सर्राफ के प्रतिष्ठान पर भी बहुत भीड़ थी। इन सब से बेख़बर बालक सीधे जाकर दरवाजे पर रुका। घर के प्रत्येक सदस्य को पहचाना तथा ऐसी ऐसी बातें बताई जो सिर्फ वह और उसके परिवार के सदस्य ही जानते थे। फिर भी परिवार वालों को पूरी तसल्ली नही हुई। एक सदस्य (शायद उसके भाई) ने यह कहा कि यह सब तो ठीक है तुम कोई ऐसी बात बताओ जो केवल तुम जानते हो। परिवार के किसी और को इसके बारे में पता न हो। यह सुन वह बालक घर के एक कोने की ओर ले गया और कहा कि इस जगह पर आप ख़ुदाई करवाओ यहाँ पर मैने एक घड़े में आप सब लोगो से छिपाकर सोने चाँदी के सिक्के व अन्य समान छिपा रखा है। परिवार के सदस्यों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में उस जगह पर ख़ुदाई कराई गई। उस बालक के कथनानुसार उस जगह पर एक घड़ा मिला उसमें वह सब कुछ था जो उस बालक ने बताया था।

उस परिवार वालों को पूरी तसल्ली हो गई कि बालक उस परिवार का सदस्य था। जिसकी कुछ सालों पहले अकस्मात निधन हो गया था। घर के मुखिया ने बालक को गले लगा लिया और उसके पिता से कहा कि वह बालक के वजन के बराबर जो चाहे ले ले और उसको वही छोड़ दे। बालक के पिता ने बहुत ही विनम्रता से कहा कि हमलोग गरीब जरुर हैं पर इतने नहीं कि बच्चे को न पाल सके। हम इतना कर सकते हैं कि जब यह बालक चाहेगा हम इसको आपके पास ले आयेंगे तथा आप लोग भी जब भी इससे मिलने के लिए आना चाहें आपका स्वागत है। बालक ने भी शायद परिस्थितियों से समझौता कर लिया था। उसने वहाँ रहने की जिद नहीं की।

यदा कदा पुनर्जन्म के किस्से अख़बारों में मिल जाते है। पर एक यक्ष पश्न का असर कोई नही दे पाता। वह यह कि मृत्यु के पश्चात आत्मा कहाँ भटकती रहती है तथा मृत्यु से पुनर्जन्म तक क्या होता है। शायद इन यक्ष प्रश्नों का उत्तर कभी भी नहीं मिलेगा। यह प्रकृति का गूढ़ रहस्य ही रहेगा।

नवल चौरसिया

जन्मांध डॉगी

मैं अपने एक मित्र के यहाँ से एक खूबसूरत झबरा पिल्ला घर ले आया। पशु पक्षी पालने दादा जी ने बहुत से जानवर पाल रखे थे। दादा जी के उस शौक को पिता जी ने भी बरकरार रखा। वह तो इतने शौकीन थे कि किसी अपने दोस्त के यहाँ से विदेशी नस्ल के दो पिल्ले (उसकी आंखे तक नहीं खुली थे) चिस्टर की जेब में रखकर ले आये। गांव में उनको रुई के धागे से दूध पिला पिला कर बड़ा किया गया। यहाँ पर मुझे एक बहुत ही रोचक प्रसंग याद आ गया।

उस समय पिता जी बस्ती में थें। हम लोग 3 भाई थे। छोटे भाई का तो मुड़न भी नहीं हुआ था। माँ उसके बालो की चोटी कर दिया करती थी। वहाँ सब लोग कहते थे कि साहब के दो बेटे और एक बेटी है। पिता जीनेन जाने कहाँ से एक तोता मंगवाया। वह खुला ही रहता तथा हम लोगों के साथ खेलता रहता। कभी भी उसने बाहर जाने का उपक्रम नहीं किया। हाँ वह मां से न जाने क्यों बहुत चिढ़ता था।

पिता जी कभी कभार गुस्सा होकर हम लोगों को डांटते तो सुअर,गदहा और पाजी कहते थे। तोता ने भी यह सीख लिया और हम लोगों वा पिता जी की तरह डांट कर सुअर,गदहा,पाजी कहता। सबसे मनोंरजन क्षण तो वह होते थे जब मैं पिता जी की लाई हई सब्जि़यों की टोकरी टेबल पर पलटता। उसमें से सबजी, मटर की फलियां तथा अमरुद आदि खाने के लिये तोता तुरन्त उड़कर टेबल पर आता। मैं अपने हाथ से उसको हटाने का प्रयब्त करता तो वह आखें लाल पीली कर सुअर,गदहा,पाजी कहने लगता हम सब लोग हसंते तो वह और जोर से चिल्लाता। वे क्षण बहुत ही मनोरजंन होते थे।

लखनऊ प्रवास के दौरान मैंने भी एक पहाड़ी तोता पाला। वह मुझे पापा जी व अन्य सदस्यों की नाम लेकर पुकारता। एक दिन मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ कार्डस खेल रहा था। तोते ने पुकारा पापा जी मैने कहा क्या है ? वह बोला क्या कर रहे हो ? मैने कहा बैठा हूँ। वह अच्छा कह कर चुप हो गया। मेरे एक दोस्त ने कहा कि कौन बच्चा हैं-मैंने कहा बच्चा नहीं तोता हैं। उनको विश्वाश ही नहीं हुआ। वह बोले इतना साफ बोलने वाला तोता हैं मैंने कभी देखा नहीं चलो दिखाओ। मैं जब उनको लेकर उसके पिज़रे के पास गया तो वह बड़े प्यार से बोला-पापा जी-वह आश्र्च्य चकित होकर रह गये।

मेरे मकान के पड़ोस में रहने वाली एक सुहृदय महिला ने मुझसे कहा कि भाई साहब मुझे भी एक ऐसा तोता मंगवा दीजिये। मैने नक्खास बाजार से चिड़ियो के व्यापारी से उनके लिये तोता मंगवा दिया। तोता तो घर के बच्चे बूढ़े जो बोलते है वही सुनता और दोहराता है। तोता रट्ते इसी को कहा जाता है। उनको यहाँ कोई बच्चे वगैरह तो थे नहीं वह केवल मियाँ बीबी थे और अधिक्तर घर के अंदर ही रहते थे। तोते का पिंजरा बाहर रहता था अब तोते सीखे तो क्या सीखे ? यह महज एक संयोग था कि उनका टेलीफोन बाहर रक्खा था। टेलीफोन की घंटी बजती तो वह बाहर प्राणी और हलो हलो बात कर वापस चली जाती। तोता महाशय ने यही सीख लिया वह कई बार घंटी बजाता वह जब बाहर आती तो तोता राम को हलो हलो करते पाती। तंग आकर एक दिन उन्होने तोते को उड़ा दिया।

अब प्रमुख विषय पिल्ले की बात पर आते हैं। मैने देखा कि पिल्ला चलते समय किसी न किसी से टकरा जाता है। मुझे लगा कि झबरे बालों की वजह से वह स्पष्ट देख नहीं पा रहा है।

मेरे मन में विचार आया कि यदि इसकी आंखो के समने पड़ने वाले बालों को काट दिया जाय तो इसकी देखने की समस्या दूर हो जायेगी। मैने उसको गोद में उठा लिया और आंखों के सामने वाले बालों को हटाने पर पाया कि उसकी दोनो आंखो की पलके आपस में चिपकी हुई थी। मैने सोचा कि इसका इलाज तो एक माइनर ऑपरेशन द्वारा डाक्टर कर देगा। मैं उसको घोड़ा अस्पताल लेकर गया। वहाँ डाक्टरों ने उसके पलको हटाया तो पाया कि उसकी दोनो आंखो में आई बाल्स ही नहीं है। वह ताजुब्ब में पड़ गये। उन्होने कहा कि भई इसका तो कोई इलाज ही नही है। ऐसा केस तो हमलोगो की जिंदगी में पहली बार आया है।

मै भी सकते में आ गया। मेरी गति तो सांप छछूंदर जैसी हो गयी। लेकिन वह गजब का पिल्ला निकला। घर के सारे रास्ते उसको पता हो गये। घर के हर सदस्य को वह पहचानने लगा। उसके रहते बाहर का कोई भी अनजान व्यक्ति का प्रवेश नमुम्किन था। मुझसे तो वह बेहद हिला हुआ था। अंतिम सांस तक वह हमारे परिवार में ही रहा। निष्प्राण होने पर हम लोगों ने उसका यथोचित अंतिम संस्कार कर दिया।

नवल चौरसिया

प्रकृति की लीला

पटना के समीप एक गांव में जाने कहाँ से एक बड़ा सा केकड़ा आ गया। बच्चों को तो मानो खिलौना मिल गया। कुछ शरारती बच्चे उसको कंकड़ पत्थर मारने लगे। एक लड़के ने तो बड़ी सी ईट उसके उपर दे मारी। जिससे उसका पेट फट गया। उसमें से जो भ्रूण निकला वह मानव आकृति के भ्रूण के समान था। नाल वगैरह भी लगी हुई थी।

लड़के तो भय के कारण तो भाग गयें। परन्तु गांव के प्रधान ने बहुत ही समझदारी का परिचय देते हुए उस भ्रूण को केकड़े सहित एक तसले में रखवाया तथा उसको स्प्रिट से भर दिया। यह एक अजीबो गरीब मामला था। समाचार पत्रों ने थोड़ा नमक मिर्च लगा कर इसको प्रमुखता से छापा। पटना प्रशासन ने स्वतः इसका संज्ञान लेते हुए वेटेनरी डाक्टरों का एक दल वहाँ जाँच के लिए भेजा। उन लोगों की समझ में कुछ नहीं आया। इसी प्रकार की एक एक टीम दिल्ली तथा मुम्बई से भी गई। वह भी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके। उन सब ने एक मत से कहा कि ''दिस इज इनवर्टीबरेट ऑफ दी नेचर'' कुछ दिनों तक यह मामला सुर्खियों मे रहा फिर सब कुछ शान्त हो गया।

नवल चौरसिया

समाधान

यह वाक्या झांसी के पास बने माताटीला डैम का है। एक दि हम लोगो का आकस्मात ही वहाँ जाने का प्रोग्राम बन गया। हलांकि मैने कहा कि यदि पहले से ही पता होता तो कुछ खाने पीने की व्यवस्था कर के चलते। मेरी आवाज तो जैसे किसी ने सुनी ही नहीं।

जब हम लोग बबीना कैंट से गुजर रहे थे। तो एक साथी ने अपने किसी मित्र से एक बोतल विहस्की ले ली। माताटीला डैम पहुँचने पर हम लोग उसकी सुन्दरता देख कर अवाक रह गये। मानव द्वारा निर्मित यह डैम अद्वतीय है। हम लोग काफी देर तक वहाँ घूमते रहे। हम लोगो को एक चीज अखर रही थी। वह यह कि वहाँ हम लोगों को एक छोटी सी दुकान भी नही मिली अब समस्या थी कि विहस्की कैसे गले की नींचे उतारी जाय। हम लोग केवल ३ व्यक्ति थे। मैं, फील्ड आफीसर गुप्ता जी तथा प्रोबेशनरी अधिकारी गोपालन। गोपालन कहने लगा कि मेरे लिए तो कोई प्राब्लम नहीं है मैं तो सीधे ही बोतल से पी लूंगा। मगर हम लोग ऐसा नहीं कर सकते थे। अचानक ही मेरी नजर पार्क के एक कोने में लगे टैप पर पड़ी। मैने कहा गोपालन प्राबलम साल्व हो गई। अब तुम जितनी पी सकते हो पी सकते हो पी लो। उसने कहा कैसे प्राबलम साल्व हो गई मुझे तो कुछ नजर नहीं आ रहा है। मैने कहा यह मैं बाद में बताऊंगा पहले तुम बोतल खोलो और पियो। उसने बोतल खोला और एक सांस में लगभग आधी पी गया। मैने गुप्ता से कहा कि आओ भई अब हम लोगों की बारी है। मैं गुप्ता जी को नल के पास ले गया और कहा कि चुल्लू लगा कर इसके नीचे बैठ हल्का सा नल खोल लो मैं उपर से शराब गिरात हूँ। गुप्ता जी के पश्चात मैने भी वैसा ही किया और इस प्रकार चुल्लू से मदिरापान किया।

बाद में गुप्ता जी व गोपालन कहने लगे साहब मान गये आपके ब्रेन को। हमलोग तो इस प्रकार ड्रिंक लेने की सोंच भी नहीं सकते थे। यह हम लोगों को जीवन भर याद रहेगा।

नवल चौरसिया

नाश्ता

इलाहाबाद से कानपुर आते समय मेरे बॅास कि कार दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। हादसा बमरौली के निकट हुआ कार में सवार लगभग सभी लोग चोटिल हो गये। बास का ढायां हाथ ही टूटा मगर कार चालक के दोनों पैर टूट गये। बास का रसूख़ बहुत अच्छा था लिहाज़ा सबको तुंरत स्वरूप रानी हास्पिटल इलाहाबाद ले जाया गया बॅास कि तो प्लास्टर के पश्चात छुट्टी कर दी गयी परन्तु कार चालक को सर्जिकल वार्ड में भर्ती कर लिया गया। कार चालक कि देख रेख तथा समुचित उपचार का कार्य मुझे सौपा गया।

सर्जिकल वार्ड में करछ्ता का भी एक व्यक्ति भर्ती था। उसका अनुज पुलिस विभाग में कार्यरत था। उसकी अकसर मुझसे मुलाकात होती रहती थी। मैं उसके भाई का हाल चाल पूछता रहता था। उसका सुबह का नाश्ता बड़ा अज़ीबो गरीब़ था। वह तौल कर एक छटाक हरी मिर्च ख़ूब चबा चबा कर ख़ाता उसके बाद एक कटोरी कड़ुवा तेल पीता था। यदा कदा तो अस्पताल के कर्मचारियों की भीड़ लग जाती थी। किसी को विश्वास ही नहीं होता कि कोई ऐसा भी नाश्ता कर सकता है।

ऐसे ना जाने कितने ही प्रसंग मेरे जेहन में उत्साह मचाते रहते हैं। मैं यदा कदा इस्को कागज़ पर उतारने का प्रयास करता हुँ.विसे घरा पर मानव ही एक ऐसा प्रारीा है जिसकी आकाक्षों का कोई आदि अंत नहीं होता है वह सदा अतृप्र ही रहता है। इसका कितना सुदंर में किया है :-

कितनी ही इच्छाये मरने वाला, छोड़ यहाँ पर जाता है।
कितने ही अरमानो की चिता जलाती मधुशाला।।

दीपावली

नयन नीर उर पीर लिये
हम त्योहार मनाये कैसे।
नीरस है जीवन अपना
मेघ मल्हार हम गाये कैसे।।
आज अगर तुम होते
तो कुछ और बात होती।।
हसीं खुशी त्योहार मनाते
खुशिया अपार होती।।
तुम बिन त्योहारों
का मज़ा क्या हैं।
जी रहे है सतांप लिये
इससे बड़ी सज़ा क्या है।।
उजड़े यमन में
बुलबुले आती नहीं।
कोयल भी मधुसिक्त
गान गाती नहीं।।
अपने मन को हम
कैसे समझाये।
तुम बिन हम
कैसे नाचे गायें।।
नयन नीर उर पीर लिये।
हम कैसे त्योहार मनायें।।

नवल चौरसिया
1/07/2016

उल्लास

सुधियों के बादल
अनायास गहराते हैं।
नैन हमारे गुप चुप
नीर बहाते हैं।।
कितना कोलाहल इस
वीरान हृदय में होता।
एक तुम्हारे लिये प्रारा
चुपचाप विकल यह रोता।।
अब जीने की चाह नहीं
जीवन में उत्साह नहीं।
यह जीवन अब सुहाता नहीं
बिन तुम्हारे रहा जाता नहीं।।
कोई और ठिकाना अब नहीं
हम क्या करें कहाँ जाये।
नैराश्य भरे जीवन में
नव उल्लास कहाँ से लाये।।

नवल चौरसिया
1/07/2016